

世親の『五蘊論』——校訂テキストとリファレンス——

瀧川郁久

緒 言

仏教文献の解説の為には、術語の正確な理解が不可欠である。ことにアビダルマ論書では、法の分類と定義が明確に示された上で議論がなされているので、先ずその定義を的確に知ることが必要になる。それには原典の記述から定義を取り出してまとめた定義集が有益である。

そのような定義集として、すでに『俱舍論』の五位七十五法の定義をまとめた定義集(本庄良文『『俱舍論』七十五法定義集』三康文化研究所年報 26/27, 1993)が発表されている。各々の法の定義のサンスクリット原文と漢訳、及び和訳が示され、出典が明記されているため、アビダルマ文献の学習に非常に有益なものである。

当初はこの『『俱舍論』七十五法定義集』の形に倣って、『五蘊論』の定義集を作成する心算でいたが、本稿では敢えて五位の形に整理せず、『五蘊論』蔵漢対照テキストに簡単なリファレンスを付して発表することにした。『五蘊論』はもともと定義集の如きものであるから、本文全体の校訂テキストを用意して項目を見易く示しさえすればそのまま定義集の用を果たしうるし、またそのほうが便利でもあらうと思われるからである。

そこで、本稿では、左ページにチベット語訳の校訂テキストを、右ページに漢訳テキストと簡単なリファレンスを掲載した。リファレンスは、誌面の都合上、原則として各項目に一つずつ、『瑜伽師地論』『俱舍論』『阿毘達磨集論』『唯識三十頌釈』などの関連文献から一致または類似するサンスクリット文を拾ったものである。甚だ不十分なものであるが、理解の手掛かりにはなろうと思う。

本稿には邦訳は付していないが、『五蘊論』の翻訳としては、次のものが発表されている。

下川辺季由・高山博史『『五蘊論』研究(一)』仏教学論集 12, 1976.

S. Anacker, *Seven Works of Vasubandhu*, Delhi 1984, pp.49-82.

また『五蘊論』のサンスクリット還元テキストも発表されているが、残念ながら未だ管見を得ていない。

S.B.Shastri, *Pañcaskandhaprakaraṇa of Vasubandhu*, A Restitution into Sanskrit from the Tibetan Version, together with Introduction, English Translation, Notes. Kelanya 1969.

『五蘊論』の心所法の一々の定義については、竹村牧男『唯識の探究』(春秋社、1992)第三章「唯識の心理分析」において、『三十頌釈』『阿毘達磨集論』『成唯識論』の定義と比較しながら解説がなされている。

さらに、本年九月の日本印度学仏教学会学術大会において、望月海慧氏の発表資料として、『五蘊論』安慧釈のうちの遍行・別境心所法の部分のテキストと詳細なリファレンスが配布された。

なお本稿で用いたチベット語訳校訂テキスト及び漢訳テキスト、ならびにリファレンスは本誌の刊行にあわせて、東洋文庫チベット研究室のホームページからインターネット上でテキストデータベースとして公開し、各位の研究の便に供したい。URLは <http://www.toyo-bunko.or.jp/Tibetan/> である。

テキストおよび略号

チベット語訳テキスト

ཡུང་པོ་ལྷན་རྒྱུ་བྱེད་པ།

- P** Peking edition: No. 5560. si 12b6-19a2.
D sDe-dge edition: No. 4059. shi 11b4-17a7.
C Co-ne edition: shi 11b4-17a6.
N sNar-thang edition: si 12b2-17b.

(校訂テキスト中では、北京版のフォリオ・行数を[12b6]のように示し、他の版はフォリオのみ[D11b]のように示す。)

漢訳テキスト

大乘五蘊論, 大正蔵31 (No.1612), 848b-850c.

リファレンス略号

- AK** Abhidharmakośakārikā. v.i.
AKBh Abhidharmakośabhāṣya. P.Pradhan, *Abhidharmakośabhāṣya of Vasubandhu*, 2nd edition, Patna 1975.
AS Abhidharmasamuccaya. V.V.Gokhale, "Fragments from the Abhidharmasamuccaya of Asaṅga," *Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society*, n.s.vol.23, 1947.
ASBh Abhidharmasamuccayabhāṣya. N.Tatia, *Abhidharmasamuccaya-bhāṣyam*, Patna 1976.
Tr Triṃśikākārikā. v.i.
TrBh Triṃśikābhāṣya. S.Lévi, *Vijñaptimātratāsiddhi*, Paris 1925.
Y Yogācārabhūmi. V.Bhattacharya, *The Yogācārabhūmi. of Asaṅga*, University of Calcutta 1957.

『五蘊論』の五位

世親の『五蘊論』に含まれる法の名目を、五位の形に整理すると次のようになる
(数字は北京版)。

色 (rūpa, ཀུན་གསལ་) [12b7]

四大種 (catvāri mahābhūtāni, འབྲུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་) [12b8]

地界 (pṛthivīdhātu, སའི་ཁམས་) [13a1]

水界 (abdhātu, རླུ་འཁམས་) [13a1]

火界 (tejodhātu, མེ་འཁམས་) [13a1]

風界 (vāyudhātu, རླུང་གི་ཁམས་) [13a1]

所造色 (upādāyarūpa, ཐུར་བྱས་པའི་ཀུན་གསལ་) [13a2]

眼根 (cakṣur-indriya, མིག་གི་དབང་པོ་) [13a3]

耳根 (śrotra-indriya, རྟ་བའི་དབང་པོ་) [13a3]

鼻根 (ghrāṇa-indriya, ལྗང་འཁམས་) [13a4]

舌根 (jihvā-indriya, ལྕེ་འཁམས་) [13a4]

身根 (kāya-indriya, ལུས་ཀྱི་དབང་པོ་) [13a4]

色 (rūpa, ཀུན་གསལ་) [13a4]

声 (śabda, ལྒྱ་) [13a5]

香 (gandha, ཁྱི་) [13a6]

味 (rasa, རོ་) [13a6]

所触一分 (spraṣṭavya-ekadecśa, རེག་བྱའི་ཕྱགས་གཅིག་) [13a7]

無表色 (avijñapti, རྟོག་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པ་) [13a8]

心 (citta, སེམས་)

識 (vijñāna, རྟོག་པར་ཤེས་པ་) [16b8]

心 (citta, སེམས་) [17a1]

意 (manas, ཡིད་) [17a4]

心所 (caitta, སེམས་ལས་འབྲུང་བ་) [13b4]

遍行 (sarvatraga, ཀུན་དུ་འགྲོ་བ་) [14a1]

触 (sparśa, རེག་པ་) [14a2]

作意 (manasikāra, ཡིད་ལ་བྱེད་པ་) [14a2]

受 (vedanā, རྩོལ་བ་) [13a8]

想 (saṃjñā, འདྲ་ཤེས་) [13b2]

思 (cetanā, སེམས་པ་) [14a3]

別境 (pratiniyata viṣaya, ཡུལ་སྤོས་ངེས་པ་)

欲 (chanda, འདུན་པ་) [14a3]

勝解 (adhimokṣa, མོས་པ་) [14a3]

念 (smṛti, དྲན་པ་) [14a4]

三摩地 (samādhi, ཉིང་ངེ་འཛིན་) [14a4]

慧 (prajñā, ཤེས་རབ་) [14a5]

善 (kuśala, དགེ་བ་)

信 (śraddha, དད་པ་) [14a5]

慚 (hri, རྩོམ་ཤེས་པ་) [14a6]

愧 (apatrāpya, ཁྲེལ་ཡོད་པ་) [14a6]

無貪 (alobha, མ་ཆགས་པ་) [14a7]

無瞋 (advēṣa, ཞེ་ཐུང་མེད་པ་) [14a7]

無痴 (amoha, གཏི་ལྷག་མེད་པ་) [14a7]

精進 (vīrya, བརྩོན་འགྲུས་) [14a8]

輕安 (praśrabdhi, འིན་རྟུ་ཐུངས་པ་) [14a8]

不放逸 (apramāda, བག་ཡོད་) [14b1]

捨 (upekṣā, བདང་སྟོམས་) [14b2]

不害 (avihiṃsā, རྩམ་པར་མི་འཚོབ་) [14b3]

煩惱 (kleśa, རྩོན་མོངས་པ་)

貪 (rāga, འདོད་ཆགས་) [14b3]

瞋 (pratigha, ཁོང་ཁྲོ་བ་) [14b4]

慢 (māna, ང་རྒྱལ་) [14b4]

慢 (māna, ང་རྒྱལ་) [14b5]

過慢 (atimāna, ཆེ་བའི་ང་རྒྱལ་) [14b5]

慢過慢 (mānātimāna, ང་རྒྱལ་ལས་ཀྱང་ང་རྒྱལ་) [14b7]

我慢 (asmimāna, ང་འོ་སྟམ་པའི་ང་རྒྱལ་) [14b7]

增上慢 (abhimāna, མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་) [14b8]

卑慢 (ūnamāna, ཐུང་ཟད་སྟམ་པའི་ང་རྒྱལ་) [14b8]

邪慢 (mithyāmāna, འོག་པའི་ང་རྒྱལ་) [15a1]

無明 (avidyā, མ་རིག་པ་) [15a2]

見 (dṛś, ལྟ་བ་) [15a3]

薩迦耶見 (satkāyadrṣṭi, འཇིག་ཚོགས་ལ་ལྟ་བ་) [15a4]

辺執見 (antagrāhadṛṣṭi, མཐར་འཛིན་པར་ལྟ་བ་) [15a5]

邪見 (mithyādrṣṭi, འོག་པར་ལྟ་བ་) [15a6]

見取 (dr̥ṣṭiparāmarśa, ལྟ་བ་མཆོག་དུ་འཛིན་པ་) [15a6]

戒禁取 (śīlavrataparāmarśa, ཚུལ་ཁྲིམས་དང་བརྟལ་བྱགས་མཆོག་དུ་འཛིན་པ་) [15a7]

疑 (vicikitsā, ཐེ་ཚོམ་) [15a8]

随煩惱 (upakleśa, རྟེ་བའི་རྟོན་མོངས་པ་)

忿 (krodha, ཁྲོ་བ་) [15b1]

恨 (upanahana, ཁྲོན་དུ་འཛིན་པ་) [15b2]

覆 (mrakṣa, འཚབ་པ་) [15b2]

恼 (pradāśa, འཛིག་པ་) [15b2]

嫉 (irṣya, ཡུག་དྲིག་) [15b3]

慳 (mātsarya, མེར་སྤྲ་) [15b3]

誑 (māyā, མྱུ་) [15b4]

諂 (śāthya, གཡོ་) [15b4]

憍 (mada, རྒྱགས་པ་) [15b4]

害 (vihimsā, རྣམ་པར་འཚོ་བ་) [15b5]

無慚 (āhrikya, རོ་ཚ་མེད་པ་) [15b5]

無愧 (anapatrāpya, ཁྲེལ་མེད་པ་) [15b6]

昏沈 (styāna, རླུགས་པ་) [15b6]

掉举 (auddhatya, རྟོད་པ་) [15b6]

不信 (āśraddhya, མ་དད་པ་) [15b7]

懈怠 (kausidya, ལེ་ལོ་) [15b7]

放逸 (pramāda, བག་མེད་པ་) [15b8]

失念 (muṣṭitasmRti, བརྗེད་ངས་པ་) [16a1]

散乱 (vikṣepa, རྣམ་པར་གཡེང་བ་) [16a1]

不正知 (asamprajanya, ཤེས་བཞིན་མ་ཡིན་པ་) [16a2]

不決定 (anyathātva, གཞན་དུ་ཡང་འབྱུར་བ་)

惡作 (kaukr̥tya, འཁྲོད་པ་) [16a3]

睡眠 (middha, གཞིད་) [16a3]

尋 (vitarka, རྟོག་པ་) [16a3]

伺 (vicāra, དཔྱད་པ་) [16a4]

心不相応行 (cittaviprayuktasamskāra, སེམས་དང་མི་ལྡན་པའི་འདུ་བྱེད་) [16a4]

得 (prāpti, ཐོབ་པ་) [16a7]

無想等至 (aśamjñisamāpatti, འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སྣོམས་པར་འཇུག་པ་) [16a8]

滅尽等至 (nirodhasamāpatti, འགོག་པའི་སྣོམས་པར་འཇུག་པ་) [16b1]

無想所有 (āśamjñika, འདུ་ཤེས་མེད་པ་) [16b2]

- 命根 (jivendriya, སློག་གི་དབང་པོ་) [16b3]
- 衆同分 (nikāyasabhāga, རིས་མཐུན་པ་) [16b4]
- 生 (jāti, སྐྱེ་བ་) [16b4]
- 老 (jarā, ག་བ་) [16b5]
- 住 (stṭhiti, གནས་པ་) [16b5]
- 無常 (anityatā, མི་རྟག་པ་ཉིད་) [16b5]
- 名身 (nāmakāya, མིང་གི་ཚོགས་) [16b5]
- 句身 (padakāya, ཚིག་གི་ཚོགས་) [16b6]
- 文身 (vyañjanakāya, ཡི་གེ་འོ་ཚོགས་) [16b6]
- 異生性 (prtagjanatva, སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་ཉིད་) [16b7]
- 無為 (asaṃskṛta, འདས་མ་བྱས་) [17b3]
- 虛空 (ākāśa, ཅས་མཁའ་) [17b3]
- 非折滅 (apratisaṃkhyānirodha, སོ་སོར་བརྟགས་པ་མ་ཡིན་པའི་འགོག་པ་) [17b4]
- 折滅 (pratisaṃkhyānirodha, སོ་སོར་བརྟགས་པའི་འགོག་པ་) [17b4]
- 真如 (tathatā, དེ་བཞིན་ཉིད་) [17b5]

(註)

世親の『五蘊論』の挙げる心不相応行は上の14法であるが、チベット語訳の安慧註 (P44a6-44b8) 及び地親註 (P176b5-178a1) では、「流転・定異・相応・勢速・次第・時・方・数・和合」を加えて、23法とする。

༡༡། །ཏྲ་གར་སྐད་དུ། བ་ཕྱ་སྐ་རྒྱ་པ་ཀ་ར་ཅ། ། བོད་སྐད་དུ། སྤང་པོ་ལྷའི་རབ་དུ་བྱེད་⁽¹⁾པ། །

འཇམ་དཔལ་གཞིན་རྒྱར་ལྷ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་^[12b7]ལོ། །

སྤང་པོ་ལྷ་ནི་གཞུགས་ཀྱི་སྤང་པོ་དང་། ཚོར་བའི་སྤང་པོ་དང་། འདུ་ཤེས་ཀྱི་སྤང་པོ་དང་། འདུ་བྱེད་
ཀྱི་སྤང་པོ་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་སྤང་པོ་ལོ། །

1. rūpaskandha

གཞུགས་གང་ཞེ་ན། གཞུགས་གང་ཡིན་^[12b8] བ་ཅི་ཡང་རུང་སྟེ། དེ་དག་ཐམས་ཅད་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་
བཞི་དག་དང་། འབྱུང་བ་ཆེན་པོའི་⁽²⁾བཞི་དག་རྒྱར་བྱས་པ་ལོ། །

འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་དག་གང་ཞེ་ན། སའི་ཁམས་དང་། རྒྱའི་ཁམས་དང་། མའི་ཁམས་དང་། ^[13a1]
རྒྱུང་གི་ཁམས་སོ། །

དེ་ལ་སའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། སྤ་བ་ཉིད་དོ། །

རྒྱའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། གཤེར་⁽³⁾བ་ཉིད་དོ། །

མའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། ཚ་བ་ཉིད་དོ། །

རྒྱུང་གི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། ཡང་ཞིང་^[13a2] གཡོ་བ་ཉིད་དོ། །

རྒྱར་བྱས་པའི་གཞུགས་གང་ཞེ་ན། མིག་གི་དབང་པོ་དང་། རྣ་བའི་དབང་པོ་དང་། སྒྲིའི་ ⁽⁴⁾དབང་པོ་
དང་། རྒྱའི་དབང་པོ་དང་། ལྷས་ ^[D12a] ཀྱི་དབང་པོ་དང་། གཞུགས་དང་། སྦྱ་དང་། ^[13a3] སྤྱི་དང་། རྩ་
དང་། རེག་བྱའི་ཕྱོགས་གཅིག་དང་། རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པ་ལོ། །

དེ་ལ་མིག་གི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷལ་ཁ་དོག་གཞུགས་དང་བའོ། ། ^[C12a]

རྣ་བའི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷལ་སྦྱ་གཞུགས་^[13a4] དང་བའོ། །

སྒྲིའི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷལ་དྲི་གཞུགས་དང་བའོ། །

རྒྱའི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷལ་རོ་གཞུགས་དང་བའོ། །

ལྷས་ཀྱི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷལ་རེག་བྱ་གཞུགས་དང་བའོ། །

གཞུགས་^[13a5] གང་ཞེ་⁽⁵⁾ན། མིག་གི་ལྷལ་ཏེ། ཁ་དོག་དང་། དབྱིབས་དང་། རྣམ་པར་རིག་བྱེད་དོ། །

སྦྱ་གང་ཞེ་ན། རྣ་བའི་ལྷལ་ཏེ། ཟིན་བ་དང་མ་ཟིན་བ་དང་གཉི་གའི་སྟེ། འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞིའི་རྒྱ་
ལས་བྱུང་བའོ། ། ^[13a6]

如薄伽梵略說五蘊。一者色蘊。二者受蘊。三者想蘊。四者行蘊。五者識蘊。

云何色蘊。謂四大種及四大種所造諸色。云何

四大種。謂地界水界火界風界。

云何地界。謂堅強性。

云何水界。謂流濕性。

云何火界。謂溫燥性。

云何風界。謂輕等動性。

云何四大種所造諸色。謂眼根耳根鼻根舌根身根。色聲香味觸一分無表色等。

云何眼根。謂色爲境清淨色。

云何耳根。謂聲爲境清淨色。

云何鼻根。謂香爲境清淨色。

云何舌根。謂味爲境清淨色。

云何身根。謂所觸爲境清淨色。

云何爲色。謂眼境界。顯色形色及表色等。

云何爲聲。謂耳境界。執受大種因聲。非執受大種因聲。俱大種因聲。

色 [12b7]

ASBh p.3,3: catvāri ca mähābhūtāny upādāyati.

四大種

AKBh p.8,21-22: kharah ṛṭhividhātuḥ. sneho 'bdhātuḥ. uṣṇatā tejodhātuḥ. īraṇā vāyudhātuḥ.

所造色 [13b2]

AK 9cd: tadvijñānāśrayā rūpaprasādāś cakṣurādayaḥ. Cf. AK13h 22,4ff.

Y p.4,9-10: cakṣuḥ katamat...cakṣurvijñānasamniśrayo rūpaprasādo...

Y p.6,7-8: śrotraṃ katamat...śrotravijñānasamniśrayo rūpaprasādo...

Y p.7,8-9: ghrāṇaṃ katamat...ghrānavijñānasamniśrayo rūpaprasādo...

Y p.8,1-2: jihvā katamā...jihvāvijñānasamniśrayo rūpaprasādo...

Y p.8,16-17: kāyaḥ katamaḥ...kāyavijñānasamniśrayo rūpaprasādo...

Y p.4,12-14: cakṣurvijñānasyālambanaṃ katamat. yad rūpaṃ sanidarśanaṃ sapratighaṃ. tat punar anekavidhaṃ. samāsato varṇaḥ samsthānaṃ vijñaptiś ca.

Y p.6,14-15: sa punar upāttamahābhūtahetuko 'nupāttamahābhūtahetuka upāttānupāttamahābhūtahetukaś ca.

ASBh p.3,17-18: lakṣaṇataḥ śrotrendriyagrāhyo yo 'rtha iti.

རྩི་གང་ཞེ་ན། ལྷའི་ཡུལ་ཏེ། རྩི་ཞི་མ་པ་^[N13a]དང་། རྩི་ང་བ་དང་། རྩི་ལས་གཞན་པའོ། །
 རྩི་གང་ཞེ་ན། ལྷའི་ཡུལ་ཏེ། མངར་བ་དང་། ལྷུར་བ་དང་། ལན་ཚྭ་དང་། ཚ་བ་དང་། ལ་བ་དང་།
 བཟ་བ་ཞེས་^[13a7]བཤེད། །
 རེག་བྱའི་ཕྱོགས་གཅིག་གང་ཞེ་ན། ལུས་ཀྱི་ཡུལ་ཏེ། འབྲུང་བ་ཆེན་པོ་རྣམས་བཞག་སྟེ། འཇམ་པ་
 ཉིད་དང་། ལྷུབ་པ་ཉིད་དང་། ལྷུ་བ་ཉིད་དང་། ཡང་བ་ཉིད་དང་། གང་བ་ཉིད་དང་། ^[13a8]བཀྲེས་པ་ཉིད་
 དང་། སྐྱེས་⁽⁶⁾པའོ། །
 རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པ་གང་ཞེ་ན། རྣམ་པར་རིག་བྱེད་དང་། ཉིང་ངེ་འཛིན་ལས་བྱུང་བའི་
 གཟུགས་ཏེ། བཟུན་དུ་མེད་ལ་ཐོགས་པ་མེད་པའོ⁽⁷⁾། །

2. vedanāskandha
 ཚོར་བ་གང་ཞེ་ན། ^[13b1]མྱོང་བ་རྣམ་པ་གསུམ་⁽⁸⁾སྟེ། བདེ་བ་དང་། ལུག་བསྐྱལ་བ་དང་། ལུག་
 བསྐྱལ་⁽⁹⁾ཡང་མ་ཡིན། བདེ་བ་ཡང་⁽¹⁰⁾མ་ཡིན་པ་སྟེ་⁽¹¹⁾། བདེ་བ་ནི་⁽¹²⁾གང་འགགས་ན། སྤང་བར་འདོད་
 པའོ། །
 ལུག་བསྐྱལ་ནི་གང་བྱུང་ན། བྱལ་^[13b2]བར་འདོད་པའོ། །
 བདེ་བ་ཡང་མ་ཡིན། ལུག་བསྐྱལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་པ་ནི་གང་བྱུང་ན། གཉིས་ཀར་འདོད་པར་མི་
 འལྱར་བའོ། །

3. samjñāskandha
 འདུ་ཤེས་གང་ཞེ་ན། ཡུལ་ལ་མཚན་མར་འཛིན་པའོ། །
 དེ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། ^[13b3]ཚུང་དུ་དང་། རྒྱ་ཆེན་པོར་ལྟར་པ་དང་། ཚད་མེད་པའོ། །

4. saṃskāraskandha
 འདུ་བྱེད་རྣམས་གང་ཞེ་ན། ཚོར་བ་དང་འདུ་ཤེས་ལས་གཞན་པ་⁽¹³⁾སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཚོས་⁽¹⁴⁾
 རྣམས་དང་། ^[D12b]སེམས་དང་ལྡན་པ་མ་ཡིན་པ་^[13b4]རྣམས་⁽¹⁵⁾སོ། །

4.a. caitta
 དེ་ལ་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཚོས་རྣམས་ཡུང་གང་ཞེ་ན། ཚོས་གང་དག་སེམས་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་
 པ་རྣམས་⁽¹⁶⁾སོ། །

云何爲香。謂鼻境界。好香惡香及所餘香。
 云何爲味。謂舌境界。甘味酢味鹹〔膩〕
 味辛味苦味淡味。
 云何爲所觸一分。謂身境界。除四大種。餘所造
 觸。滑性澁性重性輕性冷飢渴等
 云何名爲無表色等。謂有表業及三摩地所生色
 等無見無對。
 云何受蘊。謂三領納。一苦二樂三不苦不樂。
 樂謂滅時有和合欲。
 苦謂生時有乖離欲。
 不苦不樂謂無二欲。
 云何想蘊。謂於境界取種種相。
 云何行蘊。謂除受想。諸餘心法及心不相應行。
 云何名爲諸餘心法。爲彼諸法與心相應。

AKBh p.7,6-7: trividhas tu śāstre. sugandho durgandhaḥ samagandha iti.

AKBh p.7,4: madhura-amla-lavana-kaṭuka-tikta-kaṣāya-bhedāt.

AKBh p.7,9-10: catvāri mahābhūtāni ślakṣṇatvaṃ karkaśatvaṃ gurutvaṃ laghutvaṃ śītaṃ
 jighatsā pipāsā ceti.

AKBh p.8,9-10: samāsatas tu vijñaptisamādhisambhūtaṃ kuśalākuśalarūpaṃ **avijñaptiḥ**.

受 [13a8]

AKBh p.10,14: trividho 'nubhavo **vedanāskandhaḥ**. sukho duḥkho 'duḥkhāsukhaś ca.

TrBh p.20,16-18: **vedanā** anubhavasvabhāvā... tridhā bhavati. sukhā. duḥkhā. aduḥkhāsukhā
 ca.

TrBh p.20,23-p.21,1: tatra sukho 'nubhavaḥ yasminn utpanne 'viyogecchā niruddhe ca
 punaḥ saṃyogecchā jāyate. duḥkho 'nubhavaḥ yasminn utpanne viyogecchā niruddhe ca
 punar asaṃyogecchā. aduḥkhāsukho yasminn utpanne niruddhe cobhayaṃ na jāyate.

想 [13b2]

AKBh p.54,20-21: **saṃjñā** saṃjñānaṃ viṣayanimittodgrahaḥ.

TrBh p.21,2: **saṃjñā** viṣayanimittodgrahaṇaṃ.

行 [13b4]

AS p.15,11-12: itiyaṃ cetanāṃ vedanāṃ saṃjñāṃ ca sthāpayitvā tadanye caitasikā
 dharmās cittaviprayuktās ca saṃskārāḥ **saṃskāraskandha** ity ucyate.

དེ་དག་གང་གང་ཞེ་ན། རེག་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དང་། རྩོམ་བ་^[13b5] དང་། འདུ་ཤེས་དང་།
 སེམས་^[C12b] པ་དང་། འདུན་པ་དང་། མོས་པ་དང་། དུན་པ་དང་། ཉིང་པའཛིན་⁽¹⁷⁾ དང་། ཤེས་རབ་
 དང་། དད་པ་དང་། རྩོམ་ཤེས་པ་དང་། ཁྲེལ་ཡོད་པ་དང་། མ་ཆགས་པའི་^[13b6] དགེ་བའི་རྩ་⁽¹⁸⁾ བ་
 དང་། ཞེ་སྤང་མེད་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་། གཏི་སྤྲུག་མེད་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་། བརྩོན་འགྲུས་
 དང་། ཤིན་ཏུ་སྤངས་པ་དང་། བག་ཡོད་པ་དང་། བདང་སྟོམས་དང་། རྣམ་པར་མི་^[13b7] འཚོ་བ་དང་།
 འདོད་ཆགས་དང་། ཁོང་ཁོ་བ་དང་། ང་རྒྱལ་དང་། མ་རིག་པ་དང་། ལྷ་བ་དང་། ཐེ་ཚོམ་དང་། ཁྲོ་བ་
 དང་། ཁོར་དུ་འཛིན་པ་^[N13b] དང་། འཆབ་པ་དང་། འཚིག་པ་དང་། སྤྲུག་⁽¹⁹⁾ དོག་དང་།^[13b8] སེར་སྤྲ་
 དང་། སྤྲ་དང་། གཡོ་དང་། རྒྱགས་པ་དང་། རྣམ་པར་འཚོ་བ་དང་། རྩོམ་ཤེས་པ་དང་། ཁྲེལ་མེད་པ་
 དང་། རྒྱགས་པ་དང་། རྟོད་པ་དང་། མ་དད་པ་དང་། ལེ་ལོ་དང་། བག་མེད་པ་དང་། བརྟེན་ངས་པ་
 དང་།^[14a1] རྣམ་པར་གཡོངས་པ་⁽²⁰⁾ དང་། ཤེས་⁽²¹⁾ བཞིན་མ་ཡིན་པ་དང་། འབྲུང་⁽²²⁾ པ་དང་། གཉིད་
 དང་། རྟོག་པ་དང་། དཔྱད་པ་ལོ། །

དེ་རྣམས་ལས་ལྷ་ནི་ཀུན་དུ་འགྲོ་བའོ། །ལྷ་ནི་ཡུལ་སོ་སོར་ངེས་པའོ། །བཅུ་གཅིག་ནི་^[14a2] དགེ་
 བའོ། །དུག་ནི་ཉེན་མོངས་པའོ། །ལྷག་མ་རྣམས་ནི་ཉེ་ཉེ་ཉེན་མོངས་པའོ། །བཞི་ནི་གཞན་དུ་ཡང་འཇུར་
 བའོ། །

4.a.1. sarvatraga

རེག་པ་གང་ཞེ་ན། གསུམ་འདུས་ནས་ཡོངས་སུ་གཙོད་པའོ། །
 ཡིད་ལ་བྱེད་པ་གང་ཞེ་ན། སེམས་^[14a3] གྱི་⁽²³⁾ འཇུག་པའོ། །
 སེམས་པ་གང་ཞེ་ན། ཡོན་ཏན་དང་། ཉེས་⁽²⁴⁾ པ་དང་། གཉི་ག་མ་ཡིན་པ་ཡིན་པ་ལ་སེམས་མངོན་
 པར་འདུ་བྱེད་པ་ཡིད་གྱི་ལས་སོ། །

4.a.2. pratiniyataviṣaya

འདུན་པ་གང་ཞེ་ན། བསམ་པའི་དངོས་པོ་ལ་འདོད་པའོ། །
 མོས་པ་གང་ཞེ་ན།^[14a4] ངེས་པའི་དངོས་པོ་ལ་དེ་བཞིན་དུ་ངེས་པར་འཛིན་པའོ། །
 དུན་པ་གང་ཞེ་ན། འདུས་པའི་དངོས་པོ་ཉིད་མ་བརྟེན་པ་སྟེ། སེམས་ཀྱི་མངོན་པར་བརྟེན་པ་ཉིད་འོ། །
 ཉིང་པའཛིན་གང་ཞེ་ན། བརྟེན་པའི་^[D13a] དངོས་པོ་ལ་སེམས་རྩེ་^[14a5] གཅིག་པ་ཉིད་འོ། །
 ཤེས་རབ་གང་ཞེ་ན། དེ་དག་ཉིད་ལ་རབ་དུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་སྟེ། རིགས་⁽²⁵⁾ པ་དང་། རིགས་པ་མ་
 ཡིན་པས་བསྐྱེད་པ་དང་། གཞན་པའོ། །

彼復云何。謂觸作意受想思。欲勝解念三摩地
慧。信慚愧無貪善根無瞋善根無癡善根精進輕
安不放逸捨不害。貪瞋慢無明見疑。忿恨覆惱
嫉慳誑詭情害無慚無愧惜沈掉舉不信懈怠放
逸忘念散亂不止知。惡作睡眠尋伺。
是諸心法。五是遍行。五是別境。十一是善。六
是煩惱。餘是隨煩惱。四是決定。

云何爲觸。謂三和合分別爲性。

云何作意。謂能令心發悟爲性。

云何爲思。謂於功德過失及俱相違。令心造作
意業爲性。

云何爲欲。謂於可愛事希望爲性。

云何勝解。謂於決定事即如所了印可爲性。

云何爲念。謂於串習事令心不忘明記爲性。

云何三摩地。謂於所觀事令心一境不散爲性。

云何爲慧。謂即於彼擇法爲性。或如理所引。或
不如理所引。或俱非所引。

遍行

AS p.15,18-p.16,1: **sparśaḥ** katamaḥ. trikasannipāta indriyavikāraparicchedaḥ.

TrBh p.20,2-3: tatra **sparśas** trikasannipāte indriyavikāraparicchedaḥ.

AS p.15,18: **manaskāraḥ** katamaḥ. cetasa ābhogaḥ.

TrBh p.20,11-12: **manaskāraś** cetasa ābhogaḥ.

AS p.15,17: **cetanā** katamā. cittābhisamskāro manaskarma.

TrBh p.21,4: **cetanā** cittābhisamskāro manasaś cecṣṭā.

別境

AS p.16,1-2: **chandaḥ** katamaḥ. ipsite vastuni tat tad upasaṃhatā kartukāmatā.

TrBh p.25,22: tatra **chando** 'bhiprete vastuny abhilāsaḥ.

AS p.16,2-3: **adhimokṣaḥ** katamaḥ. niścite vastuni yathāniścayaṃ dhāraṇā.

TrBh p.25,25-26: **adhimokṣo** niścite vastuni tathāivāvadhāraṇaṃ.

AS p.16,3-4: **smṛtiḥ** katamā. samstute vastuni cetaso 'saṃpramoṣaḥ.

TrBh p.25,30-26,1: **smṛtiḥ** samstute vastuny asaṃpramoṣaś cetaso 'bhilapanatā.

AS p.16,4: **samādhiḥ** katamaḥ. upaparikṣye vastuni cittasyaikāgratā.

TrBh p.26,5: **samādhirūpaprikṣe** vastuni cittasyaikāgratā.

AS p.16,5: **prajñā** katamā. upaparikṣya eva vastuni dharmāṇaṃ pravacayaḥ.

TrBh p.26,7-8: **dhiḥ prajñā**. sāpy upaparikṣya eva vastuni pravacayo yogāyogavihiito
'nyathā veti.

4.a.3. kuśāla

དད་པ་གང་ཞེ་ན། ལས་དང་འབྲས་བྱ་དང་། བདེན་པ་དང་། [14a6] དཀོན་མཆོག་ལ་མངོན་པར་ཡིད་
ཆེས་པ་དང་། [C13a] འདོད་པ་དང་། སེམས་དང་བཤོ། །

འོ་ཆ་ཤས་པ་གང་ཞེ་ན། བདག་གས་ཆོས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་སྟེ། ཁ་ན་མ་ཐོ་བས་འཛོམ་⁽²⁶⁾པའོ། །

ཁྲུལ་ཡོད་པ་གང་ཞེ་ན། འཇིག་རྟེན་གྱི་^[14a7]དབང་དུ་བྱས་ཏེ་ཁ་ན་མ་ཐོ་བས་⁽²⁷⁾འཛོམ་པའོ། །

མ་ཆགས་པ་གང་ཞེ་ན། ཆགས་པའི་གཉེན་པོ་སྟེ། ཡིད་བྱུང་ཞིང་མི་ལེན་པའོ། ཞེ་སྟངས་མེད་པ་གང་ཞེ་
ན། ཞེ་སྟངས་གཉེན་པོ་སྟེ་བྱམས་པའོ། །

གདི་ལྷག་^[14a8]མེད་པ་གང་ཞེ་ན། གདི་ལྷག་གི་གཉེན་པོ་སྟེ་⁽²⁸⁾ཡང་དག་པ་ལ་ཡང་དག་པར་རྟོགས་
པའོ། །

བརྩོན་འགྲུས་གང་ཞེ་ན། ལེ་ལེའི་^[N14a]གཉེན་པོ་སྟེ། དགོ་བ་ལ་སེམས་མངོན་པར་སྟོབ་པའོ། །

ཤིན་དུ་སྤངས་པ་གང་ཞེ་ན། གནས་^[14b1]ངན་ལེན་གྱི་⁽²⁹⁾གཉེན་པོ་སྟེ། ལྷས་དང་སེམས་ལས་སུ་རུང་
བ་ཉིད་དོ། །

བག་ཡོད་པ་གང་ཞེ་ན། བག་མེད་པའི་གཉེན་པོ་སྟེ། མ་ཆགས་པ་ནས་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་བར་དེ་དག་
ལ་གནས་ནས་མི་དགོ་བའི་ཆོས་སྤང་⁽³⁰⁾ཞིང་། དེའི་^[14b2]གཉེན་པོ་དགོ་བའི་ཆོས་རྣམས་བསྐྱོམ་པའོ། །

བདང་སྟོམས་གང་ཞེ་ན། མ་ཆགས་པ་ནས་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་བར་དེ་དག་ཉིད་ལ་གནས་ཤིང་སེམས་
མཉམ་པ་ཉིད་དང་། སེམས་རྣལ་དུ་འདུག་པ་དང་། སེམས་ལྷན་གྱིས་གྲུབ་^[14b3]པ་ཡང་ཐོབ་པ་སྟེ། གང་
གི་⁽³¹⁾ཉོན་⁽³²⁾མོངས་པ་ཅན་གྱི་⁽³³⁾ཆོས་རྣམས་བས་ལ་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་མེད་པར་གནས་པ་ཉིད་དོ། །

རྣམ་པར་མི་འཛོམ་པ་གང་ཞེ་ན། རྣམ་པར་⁽³⁴⁾འཛོམ་པའི་གཉེན་པོ་སྟེ། སྟིང་ཇེ་བའོ། །

4.a.4. kleśa

འདོད་ཆགས་^[14b4]གང་ཞེ་ན། ཉེ་བར་ལེན་པའི་ཡུང་པོ་ལྔ་⁽³⁵⁾ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་དང་། ལྷག་པར་
ཆགས་པའོ། །

ཁོང་ཁྱོད་པ་གང་ཞེ་ན། སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་ཀུན་ནས་མནར་སེམས་པའོ། །

ང་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། ང་རྒྱལ་རྣམ་པ་བདུན་སྟེ་⁽³⁶⁾ [14b5] ང་རྒྱལ་དང་། ཆེ་བའི་ང་རྒྱལ་དང་། ང་རྒྱལ་
ལས་ཀྱང་ང་རྒྱལ་དང་། ངའི་སྟམ་པའི་ང་རྒྱལ་དང་། མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་^[D13b]དང་། ཟུང་ཟད་སྟམ་པའི་
ང་རྒྱལ་དང་། འོག་པའི་ང་རྒྱལ་ལོ། །

ང་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། རྩེད་དུ་⁽³⁷⁾བས་བདག་^[14b6]ཆེ་བའམ། མཚུངས་པ་དང་མཚུངས་སོ་སྟམ་དུ་
སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་པའོ། །

云何爲信。謂於業果諸諦實中。極正符順心淨爲性。
 云何爲慚。謂白增上及法增上。於所作罪羞恥爲性。
 云何爲愧。謂世增上於所作罪羞恥爲性。
 云何無貪。謂貪對治。令深厭患無著謂性。
 云何無瞋。謂瞋對治。以慈爲性。
 云何無癡。謂癡對治。以其如實正行爲性。
 云何精進。謂懈怠對治。心於善品勇悍爲性。
 云何輕安。謂龜重對治。身心調暢堪能爲性。
 云何不放逸。謂放逸對治。即是無貪乃至精進依止此故。捨不善法。及即修彼對治善法。
 云何爲捨。謂即無貪乃至精進依止此故。獲得所有心平等性心正直性心無發悟性。又由此故於已除遺染污法中無染安住。
 云何不害。謂害對治。以悲爲性。
 云何爲貪。謂於五取蘊染愛耽著爲性。
 云何爲瞋。謂於有情樂作損害爲性。
 云何爲慢。所謂七慢。一慢。二過慢。三慢過慢。四我慢。五增上慢。六卑慢。七邪慢。
 云何慢。謂於劣計已勝。或於等計已等。心高舉爲性。

善[14a5]

TrBh p.26,24-25: tatra śraddhā karmaphalasatyaratneṣv abhisampratyayaḥ prasādaś cetaso 'bhilāṣaḥ.

TrBh p.26,30-31: hrīr ātmānaṃ dharmāṃ vādhipatiṃ kṛtvāvadycna lajjā.

TrBh p.27,2-3: apatrāpyaṃ lokam adhipatiṃ kṛtvāvadycna lajjā.

TrBh p.27,4-6: alobho lobhapratipakṣaḥ.... tatpratipakṣo 'lobho bhava bhavopakaraṇeṣu cānāsaktiḥ vaimukhyaṃ ca.

TrBh p.27,7: adveṣo dveṣapratipakṣo maitrī.

TrBh p.27,10: amoho mohapratipakṣaḥ. ayathābhūtasampratipattir mohah.

TrBh p.27,12-13: vīryaṃ kausīdyapratipakṣaḥ. kuśale cetaso 'bhyutsāhaḥ.

TrBh p.27,14-15: praśrabdhir dauṣṭhilyapratipakṣaḥ kāyacittakarmānyatā.

TrBh p.27,25-27: tatrāpramādaḥ pramādhapratipakṣaḥ. alobhād yāvad vīryam aprasādaḥ. yair alobhādīn niśrityā kuśalān dharmān prajāhāti tatpratipakṣāś ca kuśalān dharmān bhāvayati.

TrBh p.27,29: upekṣā cittasamatā cittaprasāthatā cittānābhogatā.

TrBh p.28,5-6: iyaṃ ca sarvakleśopakleśānavakāśasamniśrayadānakarmikā.

TrBh p.28,6: avihimsā vihiṃsāpratipakṣaḥ.

TrBh p.28,8: kārūṇiko hi paraḍuḥkhaḍuḥkhī bhavatīti.

煩惱 [14b3]

TrBh p.28,13-14: tatra rāgo bhavabhogayor adhyavasānaṃ prārthanā ca.

TrBh p.28,16: pratighaḥ satveṣv āghātaḥ...

TrBh p.29,4-6: hināt kulavijñānavittādiḥ śreyān asmi kulavijñānavittādiḥ iti yā cittasyonnatiḥ sadṛścna vā kulādiḥ eva sadṛśo 'smīti yā cittasyonnatiḥ sa mānaḥ.

ཆེ་བའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། མཚུངས་པ་བས་བདག་ཆེ་བའམ། ཆེ་བ་དང་མཚུངས་སོ་སྟུང་དུ་སེམས་
ཁེངས་པ་གང་ཡིན་པའོ། [14b7] [C13b]

ད་རྒྱལ་ལས་ཀྱང་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། ཆེ་⁽³⁸⁾བས་ཀྱང་བདག་ཆེ་ལོ་སྟུང་དུ་སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་
པའོ།

དེ་ལོ་སྟུང་པའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་⁽³⁹⁾ན། ཉེ་བར་ལེན་པའི་ཕུང་པོ་ལྔ་པོ་རྣམས་ལ་བདག་གས་བདག་གིར་
ལྷ་བའི་སེམས་ཁེངས་[14b8] པ་གང་ཡིན་པའོ།

མདོན་པའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། གོང་མའི་ཁྱད་པར་ཐོབ་པར་བྱ་བ་མ་ཐོབ་པར་བདག་གིས་ཐོབ་པོ་སྟུང་
དུ་སེམས་ཁེངས་པ་གང་⁽⁴⁰⁾ཡིན་པའོ།

རྩུང་ཟད་སྟུང་པའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། ཁྱད་པར་⁽⁴¹⁾ཆེས་འཕགས་[15a1] པ་བས་བདག་རྩུང་ཟད་རྩུང་
སྟུང་དུ་སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་པའོ།

ལོག་པའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། ཡོན་ [N14b] ཏན་མ་ཡིན་པ་དང་ལྷན་པ་ལ་བདག་ཡོན་ཏན་དང་ལྷན་ལོ་
སྟུང་དུ་སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་[15a2] པའོ།

མ་རིག་པ་གང་ཞེ་ན། ལས་དང་འབྲས་བྱ་དང་བདེན་པ་དང་། དཀོན་མཆོག་རྣམས་མི་ཤེས་པ་དེ། དེ་
ལང་ལྷན་ཅིག་སྟེས་པ་དང་། ཀྱན་དུ་བརྟགས་པའོ།

འདོད་པ་ན་སྦྱོད་པའི་འདོད་ཆགས་དང་། ཁོང་ཁྱོད་བ་དང་། [15a3] འདོད་པ་ན་སྦྱོད་པའི་མ་རིག་པ་དེ་
དག་ནི་མི་དགེ་བའི་ཅ་བ་གསུམ་སྟེ། ཆགས་པ་དང་ཞེ་སྤང་དང་གདི་སྟུག་⁽⁴²⁾མི་དགེ་བའི་ཅ་བའོ།

ལྷ་བ་གང་ཞེ་ན། ལྷ་བ་ལྔ་སྟེ། འཇིག་ཆོགས་⁽⁴³⁾ལ་ལྷ་བ་དང་། མཐར་འཛིན་པར་ [15a4] ལྷ་བ་དང་།
ལོག་པར་ལྷ་བ་དང་། ལྷ་བ་མཆོག་དུ་འཛིན་པ་དང་། རྒྱལ་བྱིས་པ་དང་། བརྒྱལ་བྱགས་མཆོག་དུ་འཛིན་
པའོ།

འཇིག་⁽⁴⁴⁾ཆོགས་ལ་ལྷ་བ་གང་ཞེ་ན། ཉེ་བར་ལེན་པའི་ཕུང་པོ་ལྔ་རྣམས་ལ་བདག་ [15a5] གས་བདག་
གིར་ལྷ་བའི་ཤེས་རབ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ།

མཐར་འཛིན་པར་ལྷ་བ་གང་ཞེ་ན། དེ་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ། རྟག་པའམ་ཆད་པར་ལྷ་བའི་ཤེས་
རབ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ། [15a6]

ལོག་པར་ལྷ་བ་གང་ཞེ་ན། རྩ་ [D14a] འམ་འབྲས་བྱ་འམ། ཕྱེད་པ་ལ་སྦྱར་པ་འདེབས་པ་དང་། ཡོད་
པའི་དངོས་པོ་ལ་འཇིག་⁽⁴⁵⁾པའི་ཤེས་རབ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ།

ལྷ་བ་མཆོག་དུ་འཛིན་པ་གང་ཞེ་⁽⁴⁶⁾ན། ལྷ་བ་ [15a7] རྣམ་པ་གསུམ་པོ་དེ་དག་ཉིད་དང་། དེའི་གནས་
ཕུང་པོ་རྣམས་ལ་མཆོག་དང་གཙོ་བོ་དང་། ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་དང་། དམ་པར་ལྷ་བའི་ཤེས་རབ་
ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ།

云何過慢。謂於等計已勝。或於勝計已等。心高舉爲性。
 云何慢過慢。謂於勝計已勝。心高舉爲性。
 云何我慢。謂於五取蘊隨觀爲我或爲我所。心高舉爲性。
 云何增上慢。謂於未得增上殊勝所證法中。謂我已得。心高舉爲性。
 云何卑慢。謂於多分殊勝計已少分。下劣心高舉爲性。
 云何邪慢。謂實無德計已有德。心高舉爲性。
 云何無明。謂於業果及諦實中無智爲性。此復二種。所謂俱生分別所起。又欲纏貪瞋及欲纏無明。名三不善根。謂貪不善根。瞋不善根。癡不善根。
 云何爲見。所謂五見。一薩迦耶見。二邊執見。三邪見。四見取。五戒禁取。
 云何薩迦耶見。謂於五取蘊隨觀爲我或爲我所。染污慧爲性。
 云何邊執見。爲即由彼增上力故。隨觀爲常或復爲斷。染污慧爲性。
 云何邪見。謂或謗因或復謗果。或謗作用或壞善事。染污慧爲性。
 云何見取。謂即於三見及彼所依諸蘊。隨觀爲最爲上爲勝爲極。染污慧爲性。

TrBh p.29,7-8: kulavijñānavitāḍibhiḥ sadṛśāt tyāgaśīlapauruṣāḍibhiḥ śreyān asmi śreyasā vākulavidyāḍibhiḥ sadṛśo 'smi vijñānavitāḍibhir ity ayam **atimānaḥ**.

TrBh p.29,9-10: śreyasaḥ kulavijñānavittair aham eva śreyān kulavijñānavittair iti yā cittasyonnatir ayam **mānātimānaḥ**.

TrBh p.29,10-11: pañcasūpādānaskandheṣv ātmātmiyarahiteṣv ātmātmiyābhiniveśādyā cittasyonnatīḥ so 'smimānaḥ.

TrBh p.29,12: aprāpta uttare viśeṣādhigame prāpto mayoti yācittasyonnatīḥ so 'bhimānaḥ.

TrBh p.29,13-14: bahvantaraviśiṣṭāt kulavidyāḍibhir alpāntarahīno 'smi kulavidyāḍibhir iti yā cittasyonnatir ayam ūnamānaḥ.

TrBh p.29,14-15: aguṇavato guṇavān asmīti yā cittasyonnatīḥ sa **mithyāmānaḥ**.

無明

TrBh p.28,23-24: moho 'pāyeṣu sugatau nirvāṇe tatpratiṣṭhāpakeṣu hetuṣu teṣāṃ cāvīparīte hetuphalasāmbandhe yad ajñānam.

AK V,20ab: kāme 'kuśalamūlāni rāgapratighamūḍhayaḥ.

AKBh p.291,7-8: "trīṇy akuśalamūlāni (AK I,20c)" lobho 'kuśalamūlaṃ dveṣo moho 'kuśalamūlam.

見

TrBh p.29,21: **satkāyadṛṣṭir** yat pañcasūpādānaskandheṣv ātmātmiyadarśanam.

TrBh p.29,21-22: **antagrāhadṛṣṭis** teṣv eva pañcasūpādānaskandheṣv ātmātmiyatvena grhīteṣu yad ucchedataḥ śāśvatato vā darśanam.

TrBh p.29,23-24: **mithyādṛṣṭiḥ**. yayā mithyādṛṣṭyā hetum vāpavadati phalaṃ kriyāṃ vā sad vā vastu nāśayati.

TrBh p.29,24-25: **dṛṣṭiparāmarśaḥ**. pañcasūpādānaskandheṣv agrato viśiṣṭataḥ śreṣṭhataḥ paramatāś ca yaddarśanam.

ཚུལ་ཁྲིམས་དང་བརྟུལ་ [15a8] རྒྱགས་མཚོག་ [C14a] ཏུ་འཛིན་པ་གང་ཞེ་ན། ཚུལ་ཁྲིམས་དང་བརྟུལ་
རྒྱགས་དང་། དེ་ལྟར་སྤང་པོ་རྣམས་ལ་དག་པ་དང་། གྲོལ་བ་དང་ངེས་པར་འབྱིན་པར་ལྟ་⁽⁴⁷⁾བའི་ཤེས་
རབ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ། །

ཐོཾ་མ་གང་ཞེ་ན། [15b1] བདེན་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་གང་ཡིད་གཉིས་ན་ཟེ་བའོ། །

ཉོན་མོངས་པ་དེ་དག་ལས་ལྟ་བུ་ལོག་མ་གསུམ་དང་། ཐོཾ་མ་ནི་ཀྱན་ཏུ་བརྟགས་པའོ། །
ལྟག་མ་ནི་ལྟན་ཅིག་སྦྱེས་པ་དང་། ཀྱན་ཏུ་བརྟགས་པའོ། །

4.a.5. upakleśa

ཁྲོལ་གང་ཞེ་ན། [15b2] འཕྲལ་ཏུ་གཞོད་པ་བྱེད་པ་ལ་གནས་ཏེ། གང་སེམས་ཀྱི་ཀྱན་ནས་མཛར་
སེམས་པའོ། །

ཁོན་ཏུ་འཛིན་པ་གང་ཞེ་ན། མདུད་⁽⁴⁸⁾པར་འཛིན་པའོ། །

འཆབ་པ་གང་ཞེ་[N15a] ན། བདག་གི་ཁ་ན་མ་ཐོབ་མ་ཆུང་པའོ། །

འཛོག་[15b3] པ་གང་ཞེ་ན། ཚོག་བརྒྱུད་པོས་ཞེར་འདེབས་པ་ཉིད་དོ། །

ཕྲག་དོག་གང་ཞེ་ན། གཞན་གྱི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་སེམས་ཁོང་ནས་འབྱུག་⁽⁴⁹⁾པའོ། །

སེར་སྒྲ་གང་ཞེ་ན། སྦྱིན་པ་དང་མི་མཐུན་པའི་སེམས་ཀྱི་⁽⁵⁰⁾ཀྱན་ཏུ་[15b4] འཛིན་པའོ། །

སྦྱ་གང་ཞེ་ན། གཞན་སྦྱ་བ་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་དོན་སྟོན་པའོ། །

གཡོ་གང་ཞེ་ན། བདག་གི་ཉེས་པ་བཅབ་པའི་ཐབས་གཟུང་⁽⁵¹⁾སྟེ་སེམས་ཀྱི་བྱ་བའོ། །

རྒྱགས་པ་གང་ཞེ་ན། བདག་གི་[15b5] ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་ཆགས་པའི་རབ་ཏུ་དགའ་བའི་སེམས་⁽⁵²⁾
ཡོངས་སུ་འཛིན་པའོ། །

རྣམ་པར་འཚོ་བ་གང་ཞེ་ན། སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་⁽⁵³⁾པའོ། །

ངོ་ཚ་མེད་པ་གང་ཞེ་ན། ཁ་ན་མ་ཐོབས་བདག་[15b6] ལ་མི་འཛོམ་⁽⁵⁴⁾པའོ། །

ཁྲེལ་མེད་པ་གང་ཞེ་ན། ཁ་ན་མ་ཐོབས་གཞན་ལ་མི་འཛོམ་⁽⁵⁵⁾པའོ། །

སྦྱགས་པ་གང་ཞེ་ན། སེམས་ལས་སྦྱ་མི་རུང་བ་སྟེ། སྦྱོང་⁽⁵⁶⁾བ་ཉིད་དོ། ། [D14b]

ཁྲོད་པ་གང་ཞེ་ན། སེམས་རྣམ་པར་མ་[15b7] ཞི་བའོ། །

མ་དད་པ་གང་ཞེ་ན། ལས་དང་འབྲས་བུ་དང་། བདེན་པ་དང་། དཀོན་མཚོག་རྣམས་ལ་ཡིད་མི་ཆེས་
པ་དང་། སེམས་⁽⁵⁷⁾མ་དད་པ་སྟེ། དད་པའི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་སོ། །

ལེ་ལོ་གང་ཞེ་ན། [15b8] དགེ་བ་ལ་སེམས་མངོན་པར་སྦྱོབ་མེད་པ་སྟེ། བཙོན་འགྲུས་ཀྱི་མི་མཐུན་པའི་
ཕྱོགས་⁽⁵⁸⁾སོ། །

བག་མེད་པ་གང་ཞེ་ན། ཆགས་པ་དང་། ཞེ་སྤང་ [C14b] དང་། གཏི་སྤྲུག་དང་། ལེ་ལོ་གང་ཡིན་པ་
དག་གིས་ཉོན་མོངས་པ་[16a1] ལས་སེམས་མི་སྤྱང་བ་དང་དགེ་བ་མི་བསྟོམ་པའོ། །

云何戒禁取。謂於戒禁及彼所依諸蘊。隨觀爲清淨爲解脫爲出離。染污慧爲性。
 云何爲疑。謂於諦等猶豫爲性。諸煩惱中後三見及疑唯分別起。餘通俱生及分別起。
 云何爲忿。謂遇現前不饒益事心損惱爲性。
 云何爲恨。謂結怨不捨爲性。
 云何爲覆。謂於白罪覆藏爲性。
 云何爲惱。謂發暴惡言尤蛆爲性。
 云何爲嫉。謂於他盛事心妬爲性。
 云何爲輕。謂施相違心格爲性。
 云何爲誑。謂爲誑他詐現不實事爲性。
 云何爲諂。謂覆藏白過方便所攝心曲爲性。
 云何爲憤。謂於白盛事染著倨傲心恃爲性。
 云何爲害。謂於諸有情損惱謂性。
 云何無慚。謂於所作罪不自羞恥爲性。
 云何無愧。謂於所作罪不羞恥他謂性。
 云何惜沈。謂心不調暢無所堪蒙昧爲性。
 云何掉舉。謂心不寂靜爲性。
 云何不信心。謂信所對治。於業果等不正信順。心不清淨爲性。
 云何懈怠。謂精進所治。於諸善品心不勇猛爲性。
 云何放逸。謂即由貪瞋癡懈怠故。於諸煩惱心不防護。於諸善品不能修習爲性。

TrBh p.29,26-27: śīlavrataparāmarśaḥ. pañcasūpādānaskandheṣu śuddhito muktito nairyāṇikataś ca yaddarśanam.

TrBh p.29,27: vicikitsā. karmaphalasatyaratneṣu vimatiḥ. vividhāmatir vimatiḥ.

AKBh p.290,20-21: sahaṃ satkāyadṛṣṭir avyākṛtā. ... vikalpitā tv akuṣaleti pūrvacāryāḥ.

隨煩惱[15b1]

TrBh p.30,3: tatra krodho vartamānam apakāram āgamy yaś cetasa āghātaḥ.

TrBh p.30,6-7: upanāho vairānubandhaḥ.

TrBh p.30,10-11: mrakṣa ātmano 'vadyapracchādanā.

TrBh p.30,15: pradāśaś caṇḍavacodāśitā.

TrBh p.30,20-21: īrṣyā parasampattau cetasa vyāroṣo...

TrBh p.30,24-25: mātsaryam dānavirodhi cetasa āgrahaḥ.

TrBh p.30,29-30: māyā paravañcanā yābhūtārthasamdarśanatā.

TrBh p.31,3: śāṭhyam svadoṣapracchādanopāyasamgrhītaṃ cetasaḥ kauṭilyam.

TrBh p.31,9-10: madaḥ svasampattau raktasyoddharṣaś cetasaḥ paryādānam.

TrBh p.31,13: vihiṃsā satvavihethanā.

TrBh p.31,17: āhrikyam svayam avadyenālajjā.

TrBh p.31,18-19: anapatrāpyam parato 'vadyenālajjā.

TrBh p.31,23: styānam cittasyārmanyatā staimityam.

TrBh p.31,26: auddhatyam cittasyāvyaśamaḥ.

TrBh p.31,28: āśraddhyam karmaphalasatyaratneṣv anabhisampratyaḥ śraddhāvīpakṣaḥ.

TrBh p.31,32-p.32,1: kausidyam kuśale cetaso 'nabhyutsāho vīryavīpakṣaḥ.

TrBh p.32,3-4: pramādo yair lobhadveṣamohakausidyaiḥ kleśād rāgaḍveṣamohādikāc cittam na rakṣati kuśalam ca tatpratīpakṣabhūtaṃ na bhāvayati.

བཟེང་ངས་པ་གང་ཞེ་ན། དུན་པ་ཉོན་མོངས་ཅན་ཏེ། དགེ་བ་ལ་མི་གསལ་པའོ། །
 རྒྱུ་པར་གཡེང་⁽⁵⁹⁾བ་གང་ཞེ་ན། འདོད་ཆགས་དང་ཞེ་^[16a2]མྱང་དང་གནི་མུག་གི་ཆ་ཤས་ཀྱིས་⁽⁶⁰⁾
 འདོད་⁽⁶¹⁾པའི་ཡོན་ཏན་ལ་པོ་དག་⁽⁶²⁾ལ་གང་སེམས་རྒྱུ་པར་འབྲོ་བའོ། །
 ཤེས་བཞིན་མ་ཡིན་པ་གང་ཞེ་ན། ཉོན་མོངས་པ་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པའི་ཤེས་རབ་སྟེ། དེས་ལུས་
 དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་^[16a3]སྦྱོང་བ་ལ་མི་ཤེས་བཞིན་དུ་འཇུག་པའོ། །

4.a.6. aniyata

འབྲོད་པ་གང་ཞེ་ན། ཡིད་ལ་གཅགས་པའོ། །
 གཉིད་གང་ཞེ་ན། འཇུག་པ་རང་དབང་མེད་པར་སེམས་སྦྱང་པའོ། །
 རྟོག་པ་གང་ཞེ་ན། ཀྱམ་དུ་ཚྡལ་⁽⁶³⁾བའི་ཡིད་ཀྱིས་^[16a4]བཟོད་པ་སྟེ། སེམས་པ་དང་^[N15b]ཤེས་རབ་
 ཀྱི་བྱེ་⁽⁶⁴⁾བྲག་གང་སེམས་ཅིང་བའོ། །
 དཔྱད་⁽⁶⁵⁾པ་གང་ཞེ་ན། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡིད་ཀྱིས་བཟོད་པ་སྟེ། དེ་བཞིན་དུ་གང་སེམས་ཞིབ་པའོ། །

4.b. cittaviprayuktasamskāra

སེམས་དང་མི་ལྡན་པའི་འདུ་བྱེད་^[16a5]རྒྱུ་པར་གང་ཞེ་ན། གང་དག་གཟུགས་དང་སེམས་དང་སེམས་
 ལས་བྱུང་བའི་གནས་སྐབས་ལ་གདགས་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་དང་གཞན་དུ་མི་གདགས་སོ། །
 དེ་དག་ཀྱང་གང་ཞེ་ན། ཐོབ་⁽⁶⁶⁾པ་དང་། འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སྟོམས་^[16a6]པར་འཇུག་པ་དང་། འགོག་
 པའི་སྟོམས་པར་འཇུག་པ་དང་། འདུ་ཤེས་མེད་པ་པ་⁽⁶⁷⁾དང་། སྟོག་གི་དབང་པོ་དང་། རིས་⁽⁶⁸⁾མཐུན་པ་
 དང་། སྦྱེ་བ་དང་། གནས་པ་དང་། མི་རྟག་པ་ཉིད་དང་། མིང་གི་ཚོགས་དང་།^[16a7]ཚོག་⁽⁶⁹⁾གི་ཚོགས་
 དང་། ཡི་གེའི་ཚོགས་དང་། སོ་སོའི་སྦྱེ་བོ་ཉིད་དང་། དེ་ལྟ་བུའི་ཆ་དང་མཐུན་པ་དག་གོ། །
 དེ་ལ་ཐོབ་པ་གང་ཞེ་ན། རྟེན་པ་དང་ལྡན་པའོ། །དེ་ཡང་ས་མོན་དང་།^[D15a1]དབང་དང་། མངོན་དུ་
 ལྟར་པ་དང་།^[16a8]ཅི་རིགས་སུ་སྦྱར་⁽⁷⁰⁾རོ། །

འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སྟོམས་པར་འཇུག་པ་གང་ཞེ་ན། དགེ་རྒྱས་ཀྱི་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་ལ། གོང་མའི་
 མ་ཡིན་པ་འབྱུང་བའི་འདུ་ཤེས་མངོན་དུ་བཏང་པའི་འདུ་ཤེས་⁽⁷¹⁾ཡིད་ལ་བྱེད་པས་སེམས་དང་^[16b1]
 སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཚོས་བརྟན་པ་མ་ཡིན་པ་རྒྱུ་པར་འགོག་པ་གང་ཡིན་པའོ། །

འགོག་^[C15a]པའི་སྟོམས་པར་འཇུག་པ་གང་ཞེ་ན། ཅི་ཡང་མེད་པའི་སྦྱེ་མ་ཆེད་ཀྱི་འདོད་ཆགས་དང་
 བྲལ་ལ། སྲིད་པའི་ཅེ་མོ་ལས་ཁྱེན་དུ་བསྦྱོང་^[16b2]པའི་གནས་པར་འདུ་ཤེས་སྦྱོན་⁽⁷²⁾དུ་བཏང་བའི་ཡིད་
 ལ་བྱེད་པས། སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཚོས་བརྟན་པ་མ་ཡིན་པ་རྒྱུ་པར་དང་། བསྟན་པ་རྒྱུ་པར་
 ལས་ཀྱང་ཁ་ཅིག་འགོག་པ་གང་ཡིན་པའོ། །

云何失念。謂染污念於諸善法不能明記爲性。
 云何散亂。謂貪瞋癡分心流蕩爲性。
 云何不正如。謂於身語意現前行中不正依住爲性。
 云何惡作。謂心變悔爲性。
 云何睡眠。謂不在轉心極味略爲性。
 云何爲尋。謂能尋求意言分別思慧差別令心麁爲性。
 云何爲伺。謂能伺察意言分別思慧差別令心細爲性。
 云何心不相應行。謂依色心心法分位。但假建立不可施設。決定異性及不異性。
 彼復云何。謂得無想等至滅盡等至無想所有。命根衆同分。生老住無常。名身句身身異生性如是等類。
 云何爲得。爲若獲若成就。此復三種。謂若種子若白在若現前。如其所應。
 云何無想等至。謂已離遍淨食。未離上食。由出離想作意爲先。不恆現行心心法滅爲性。
 云何滅盡等至。謂已離無所有處食。從第一有更求勝進。由止息想作意爲先。不恆現行及恆行一分心心法滅爲性。

TrBh p.32,6: **muṣitā smṛtiḥ** kliṣṭā smṛtiḥ.

TrBh p.32,7: **vikṣepo** rāga dveṣa mohāṃśikaś cetaso viśāraḥ.

TrBh p.32,10: **asaṃprajanyaṃ** kleśasaṃprayuktā prajñā. yayāsaṃviditā kāyavākciṭṭacaryā atikramaprakramādiṣu vartate karaṇīyākaraṇīyājñānāt. etac cāpattisaṃniśrayadānakarmakam.

不決定[16a3]

TrBh p.32,12: **kaukrīyaṃ** cetaso vipratīśāraḥ.

TrBh p.32,14-15: **middham** asvatantvavṛtticetaso 'bhisamkṣepaḥ.

TrBh p.32,19: **vitarkaḥ** paryeṣako manojalpaḥ prajñācetanāviśeṣaḥ.

TrBh p.32,25: sa eva citasyaudārikatā.

TrBh p.32,26-27: **vicāro** 'pi hi cetanāprajñāviśeṣātmarkaḥ.

TrBh p.32,28: ata eva ca cittasūkṣmatety ucyate.

心不相應行 [16a4]

ASBh p.11,3-4: ity evam ete **cittaviprayuktāḥ** saṃskārāṇāṃ dharmāṇāṃ avasthāsu prajñāpanāt sarve prajñāptisanto veditavyāḥ.

AS p.18,22-23: **prāpti** katamā. ... prāptiḥ pratilambhaḥ samanvāgama iti prajñāptiḥ.

AS p.18,23-25: **asaṃjñisamāpattiḥ** katamā. śubhakṛtsnavitarāgasyo[parya]vitarāgasya nihsaraṇasaṃjñāpūrvakeṇa manasikārcnā'sthāvarāṇāṃ cittacaitasikānāṃ dharmāṇāṃ nirodhe asaṃjñisamāpattir iti prajñāptiḥ.

AS p.18,25-27: **nirodhasamāpattiḥ** katamā. ākiñcanyāyatanavitarāgasya bhavāgrāt calitasya śāntavihārasaṃjñāpūrvakeṇa manasikārcnā'sthāvarāṇāṃ cittacaitasikānāṃ dharmāṇāṃ nirodhe nirodhasamāpattir iti prajñāptiḥ.

འདྲ་ཤེས་མེད་པ་གང་། [16b3] ཞེན། འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པའི་འབྲས་བུ་སྟེ། (73)འདྲ་
ཤེས་མེད་པའི་སེམས་ (74)ཅན་གྱི་ཁྲོད་ (75)གྱི་ལྟ་རྒྱུ་ལྟ་བུ་བསྐྱེད་པའི་སེམས་དང་། སེམས་ལས་བྱུང་
བའི་ཚོས་བརྟན་ (76)པ་མ་ཡིན་པ་རྣམས་དང་འགོག་པའོ། །

སྒྲིག་གི་དབང་པོ་གང་ཞེན། རིས་མཐུན་པ་རྣམས་སུ་སྟོན་ (77)[16b4] གྱི་ལས་གྱིས་འཕངས་ (78)པས།
གང་འདྲ་བྱེད་རྣམས་གྱི་ (79)གནས་པའི་དུས་ངེས་པའོ། །

རིས་མཐུན་པ་གང་ཞེན། གང་སེམས་ཅན་རྣམས་གྱི་ལུས་འདྲ་བའོ། །

སྟེ་བ་གང་ཞེན། རིས་མཐུན་པར་འདྲ་བྱེད་རྣམས་མ་བྱུང་བ་ལས་ [16b5] བྱུང་ (80)བ་གང་ཡིན་པའོ། །

ཁ་བ་གང་ཞེན། དེ་ལྟར་ (81)དེ་དག་གི་རྒྱན་གཞན་དུ་འཕྱར་བའོ། །

གནས་པ་ [N16a] གང་ཞེན། དེ་ལྟར་དེ་དག་གི་རྒྱན་རྒྱུང་ཆགས་པའོ། །

མི་རྟག་པ་ཉིད་གང་ཞེན། དེ་ལྟར་དེ་དག་གི་རྒྱན་ཆད་པའོ། །

མིང་གི་ཚོགས་ [16b6] གང་ཞེན། ཚོས་རྣམས་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་གྱི་ (82)ཚོགས་སྒྲ་དགས་ (83)སོ། །

ཚོགས་གི་ཚོགས་གང་ཞེན། (84)ཞ། ཚོས་རྣམས་གྱི་ཁྱད་པར་གྱི་ཚོགས་སྒྲ་དགས་སོ། །

ཡི་གེའི་ཚོགས་གང་ཞེན། ཡི་གེ་ (85)རྣམས་ཏེ། དེ་གཉིས་ཀ་གསལ་ (86)བར་བྱེད་ [16b7] བའི་ཕྱིར་རོ། །
བརྗོད་པ་ཡང་དེ་དག་ཡིན་ཏེ། མིང་དང་ཚོགས་ལ་བརྟེན་ནས་དོན་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡི་གེ་ (87)ཡང་རྣམ་
གངས་གཞན་དུ་མི་འཕྱར་བའི་ཕྱིར་རོ། །

སོ་སེའི་སྟེ་བོ་ཉིད་གང་ [D15b] ཞེན། འཕགས་པའི་ཚོས་རྣམས་ [16b8] མཐོབ་པའོ། །

འདི་ནི་འདྲ་བྱེད་ཀྱི་ཡུང་པོ་ཞེས་བྱའོ། །

5. vijñānaskandha

རྣམ་པར་ཤེས་པ་གང་ཞེན། དམིགས་པ་རྣམ་པར་རིག་པའོ། །

སེམས་དང་ཡིད་ཀྱང་དེ་ཡིན་ཏེ། །

སྒྲ་ཚོགས་པ་དང་ཡིད་རྟེན་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

དངོས་སུ་ན་ [17a1] སེམས་ནི་ (88)ཀླན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྟེ། [C15b] འདི་ལྟར་དེ་ནི་འདྲ་བྱེད་ཐམས་
ཅད་ཀྱི་ས་བོན་བསགས་པའོ། །

དེ་ཡང་དམིགས་པ་དང་རྣམ་པ་ཡོངས་སུ་མ་ཆད་པའོ། །

རིགས་གཅིག་པ་དང་། [17a2] རྒྱན་ཆགས་པར་འཇུག་པའོ། །

云何無想所有。謂無想等至果。無想有情天中
生已。不恆現行心心法滅爲性。
云何命根。謂於衆同分中。先業所引。住時決定
爲性。
云何衆同分。謂諸有情白類相似爲性。
云何爲生。謂於衆同分中。諸行本無今有爲性。
云何爲住。謂即如是諸行相續變異爲性。
云何無常。謂即如是諸行相續隨轉爲性。
云何名身。謂諸法白性增語爲性。
云何句身。謂諸法差別增語爲性。
云何文身。謂諸字爲性。以能表彰前二種故。亦
名爲顯。由與名句爲所依止顯了義故。亦名爲
字。非差別門所變易故。
云何異生性。謂於諸聖法不得爲性。
如是等類已說行蘊。
云何識蘊。謂於所緣境了別爲性。
亦名心意。由採集故。意所攝故。
最勝心者。謂阿賴耶識。何以故。由此識中諸行
種子皆採集故。
又此行緣不可分別。前後一類相續隨轉。

AS p.18,27-28: **āsaṃjñīkaṃ** katamat. asaṃjñīsattveṣv deveṣūpappanasyā'sthāvaraṇaṃ
cittacaitasikānāṃ dharmāmāṃ nirodhe āsaṃjñīkaṃ iti prajñaptiḥ.

AS p.18,28-29: **jīvitendriyaṃ** katamat. nikāyasabhāge pūrvakarmāviddhe sthitikālaniyame
āyur iti prajñaptiḥ.

AS p.18,29-31: **nikāyasabhāgaḥ** katamaḥ. teṣāṃ teṣāṃ sattvānāṃ tasmims tasmin
sattvanikāye ātmabhāvasadṛśatāyāṃ nikāyasabhāga iti prajñaptiḥ.

AS p.18,31: **jātiḥ** katamā. nikāyasabhāge saṃskārāṇāṃ abhūtvā bhavḥ jātir iti prajñaptiḥ.

AS p.18,32: **jarā** katamā. nikāyasabhāge saṃskārāṇāṃ prabandhanyathātve jareti prajñaptiḥ.

AS p.18,32-33: **sthiṭiḥ** katamā. nikāyasabhā[ge] saṃskārāṇāṃ prabandhāvipraṇāśe sthitir
iti prajñaptiḥ.

AS p.18,33-p.19,1: **anityatā** katamā. nikāyasabhāge saṃskārāṇāṃ prabandhavināśe'nityateti
prajñaptiḥ.

AS p.19,1-2: **nāmakāyāḥ** katame. dharmāṇāṃ svabhāvādhiphivacane nāmakāyā iti prajñaptiḥ.

AS p.19,2-3: **padakāyāḥ** katame. dharmāṇāṃ viśeṣādhiphivacane padakāyā iti prajñaptiḥ.

AS p.19,3-4: **vyāñjanakāyāḥ** katame. tadubhayāśrayeṣv akṣaraṇaṃ vyāñjanakāyā iti prajñaptiḥ,
tadubhayābhivyañjanatām upādāya. varṇo 'pi saḥ, arthasaṃvarṇanatām upādāya. akṣaraṃ
punaḥ paryāyākṣaraṇatām upādāya.

AS p.19,5: **prthagjanatvaṃ** katamat. āryadharmāṇāṃ apratilambhe prthagjanatvam iti
prajñaptiḥ.

識 [16b8]

AK I,16a: **viññānaṃ** prativijñaptiḥ.

AKBh p.11,7: viṣayaṃ viṣayaṃ prati vijñaptir upalabdhir viññānaskandha ity ucyate.

AS p.19,12: yac cittam mano vijñānam api.

AKBh p.61,23: cinotitī cittam.

AK I,16b: manāyatanam ca tat.

འདི་ལྟར་འགོག་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་དང་། འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་དང་། འདྲ་
ཤེས་མེད་པ་པ་རྣམས་ལས་⁽⁸⁹⁾ ཡངས་ནས་ཡང་ཡུལ་རྣམ་པར་རིག་པ་ཞེས་བྱ་^[17a3] བ་འཇུག་པའི་རྣམ་
པར་ཤེས་པ་འབྱུང་བ་དང་། དམིགས་པའི་རྒྱུ་ལ་ལྟེན་⁽⁹⁰⁾ རྣམ་རྣམ་པ་གཞན་དུ་འཇུག་པ་ཉིད་དང་། ཆད་
ནས་ཡང་འབྱུང་བ་ཉིད་དང་། འཁོར་བར་འཇུག་པ་དང་། རྩོག་⁽⁹¹⁾པའི་ཕྱིར་རོ། །

ཀུན་གཞི་རྣམ་^[17a4] པར་ཤེས་པ་དེ་ཉིད་ནི་ས་བོན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཞི་ཉིད་དང་། ལུས་ཀྱི་ཀུན་གཞི་
དང་རྒྱ་ཉིད་དང་། ལུས་ལ་གནས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡང་ཕྱིར་རོ། །

ལེན་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་དེ་ཡིན་ཏེ། ལུས་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ། །^[17a5]

དངོས་སྤྱི་ནི་ཡིད་ནི་⁽⁹²⁾ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་དམིགས་ཏེ། རྟག་དུ་བདག་དུ་མོངས་པ་དང་།
བདག་དུ་ཉ་བ་དང་། བདག་དུ་ང་རྒྱལ་དང་། བདག་ལ་ཆགས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་མཚུངས་པར་ལྟན་པའི་
ཏུ་རྣམ་^[17a6]པར་ཤེས་པ་སྟེ། རིགས་གཅིག་པ་དང་། རྒྱུ་ཆགས་པར་འཇུག་པ་སྟེ། དག་⁽⁹⁴⁾བཅོམ་པ་
ལ་དང་། འཕགས་པའི་ལམ་དང་།^[N16b] འགོག་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པའི་དུས་མ་གཏོགས་སོ།

6. skandha

ཅིད་ཕྱིར་ཕུང་པོ་ཞེས་^[17a7] བྱ་ཞེན། སྤངས་པའི་ཕྱིར་ཏེ་དུས་དང་རྒྱད་དང་རྣམ་པ་དང་འགོ་⁽⁹⁶⁾བ་
དང་། ཡུལ་ཐ་དད་པའི་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་མདོར་བསྟུས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །

7. āyatana

སྟེ་མཆེད་བཅུ་གཉིས་ནི་མིག་གི་སྟེ་མཆེད་དང་། གཟུགས་ཀྱི་སྟེ་^[17a8]མཆེད་དང་། རྣ་བའི་སྟེ་⁽⁹⁷⁾
མཆེད་དང་། སྒྲིའི་སྟེ་མཆེད་དང་། སྒྲུའི་སྟེ་མཆེད་དང་། རྩའི་སྟེ་མཆེད་དང་། ལྟེའི་སྟེ་མཆེད་དང་། རོའི་སྟེ་
[D16a]མཆེད་དང་། ལུས་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་དང་། རེག་བྱའི་སྟེ་མཆེད་དང་། ཡིད་ཀྱི་^[17b1]སྟེ་མཆེད་དང་།
ཚོས་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་དོ། །

མིག་ལ་སོགས་པ་དང་། གཟུགས་དང་སྒྲ་དང་རྩའི་དང་རོའི་སྟེ་མཆེད་ལ་སོགས་པ་ཡང་ལྷ་མ་བཞིན་དུ་
བཤད་དོ། །

རེག་བྱའི་སྟེ་མཆེད་ནི་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་དག་དང་།^[17b2] གང་རེག་བྱའི་ཕྱོགས་གཅིག་བཤད་
པའོ། །

ཡིད་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་[C16a]ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ་གང་ཡིན་པའོ། །

ཚོས་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་ནི་གང་ཚོར་བ་དང་། འདྲ་ཤེས་དང་། འདྲ་བྱེད་རྣམས་དང་། རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་
[17b3]ཡིན་པ་དང་། འདྲས་མ་བྱས་སོ། །

又由此故從滅盡等至無想等至無想所有起者。
了別境名轉識還生。待所緣緣差別轉故。數數
間斷還復轉故。
又令生死流轉旋還故。
阿賴耶識者能攝藏一切種子故。
又能攝藏我慢相故。
又復緣身為境界故。即此亦名阿陀那識。能執
持身故。
最勝意者。謂緣阿賴耶識為境。恆與我癡我見
我慢及我愛等相應之識。前後一類相續隨轉。
除阿羅漢果及與聖道滅盡等至現在前位。
問以何義故說名為藏。
答以積聚義說名為藏。謂世相續品類趣處差別
色等總略攝故。
復有十二處。謂眼處色處。耳處聲處。鼻處香
處。舌處味處。身處觸處。意處法處。
眼等五處及色聲香味處。如前已釋。
言觸處者。謂四大種及前所說所觸一分。
言意識者。即是識蘊。
言法處者。謂受想行蘊無表色等及與無為。

心 [17a1]

AS p.19,12-13: tatra cittam katamat. skandhadhātāvāyatanavāsānāparibhāvitam sarvabijakam ālayavijñānam.
TrBh p.19,4-5: kiṃ tarhy aparicchinnāmbanākāram.
ASBh p.12,5-7: api ca saṃjñā vijñānakāyānām sā jātir nopalabhyate yā 'vyākṛtā vipākasaṃgrhītā syāt.
Tr 4cd: tac ca vartate srotasauḡhvat.
ASBh p.13,12-14: kena kāraṇenāsaty ālayavijñāne 'cittā samāpatir na sambhavati. tathā hy
asaṃjñīsamāpannasya vā nirodhasamāpannasya vā vijñānam eva kāyād apakrāntam syāt. nārapakrāntam
tataḥ kālakriyāiva bhavet.
TrBh p.35,2-3: evam āsaṃjñīkādiṣu manovijñāne niruddhe tadapagame punaḥ kuta utpadyate. yat tasya
kālakriyā na bhavati.
ASBh p.12,7-8: pratiniyatāśrayāḥ ṣaḍvijñānakāyāḥ pravartante...
ASBh p.12,10-11: tathā hi cakṣurvijñānam ekadā pravartate ekadā na pravartate evam avasiṣṭāni.
TrBh p.37,14: na cālayavijñānam antareṇa samsārapravṛtīr nivr̥tīr vā yujyate.
ASBh p.11,10-11: āliyante tasmīn dharmā bijataḥ, sattvā vātmagrāheṇety ālayavijñānam.
ASBh p.11,12-13: punaḥ punaḥ pratisaṃdhibandhe ātmabhāvopādānād ādānavijñānam.

意 [17a4]

Tr 5c-6d: tadāmbam manonānavijñānam mananātmakam. kleśaiḥ caturbhiḥ sahitaṃ nivr̥tāvākṛtaiḥ
sadā. ātmaḍṣṭyātmamohātmamānātmamasnehasaṃjñitaiḥ
Tr 7b-d: arhato na tat, na nirodhasamāpattau mārga lokottare na ca.
AS p.19,14-15: manaḥ katamat. yan nityakālāṃ manyanātmakam ālayavijñānālambanam caturbhiḥ
kleśaiḥ saṃprayuktam ātmaḍṣṭyātmamanehenā'smimānenā'vidyayā ca.

藏[17a6]

AKBh p.13,7: ...rāśyarthāḥ skandhārtha itī siddham.
AKBh p.13,5-7: yat kiṃcid rūpam atitānāgatapratyutpannam ādhāyātmikam bāhyaṃ vā audhārikam vā
sūksmaṃ vā hīnaṃ vā praṇītam vā yad vā dūre yad vā antike tat sarvam aikadhyam abhisamkṣipyā
rūpaskandha itī saṃkhyāṃ gacchati.

処[17a7]

AKBh p.23,19-20: "spraṣṭavyaṃ dvividhaṃ (AK 1,34a)," bhūtāni bhautikaṃ ca. tatra bhūtāni catvāri.
bhautikaṃ ślakṣṇādi saptavidham.
AKBh p.11,8-10: ya eṣa vijñānaskandha ukta āyatanavyavasthāṃ "manāyatanam ca tat (AK 1,16b)."
AKBh p.11,2-4: "ete punas trayāḥ (AK 1,15b)," vedanāsaṃjñāsaṃskāraskandhāḥ āyatanadhātuvyavasthayaṃ
"dharmāyatanadhātuvākyāḥ sahāvijñāptyaśaṃskṛtair (AK 1,15cd)."
AKBh p.11,17: vedanādayaḥ skandhāḥ trayo 'vijñāptir asaṃskṛtāni ca dharmāyatanam...

འདས་མ་བྱས་གང་ཞེན། རྣམ་མཁའ་དང་། སོ་སོར་བརྟགས་པ་མ་ཡིན་པའི་འགོག་པ་དང་། སོ་སོར་
བརྟགས་པའི་འགོག་པ་དང་། དེ་བཞིན་ཉིད་དོ། །

དེ་ལ་རྣམ་མཁའ་གང་ཞེན། [17b4] གཞུགས་ཀྱི་གོ་འབྱེད་པ་དོ། །

སོ་སོར་བརྟགས་པ་མ་ཡིན་པའི་འགོག་པ་གང་ཞེན། གང་འགོག་པ་ལ་བྱལ་བ་མ་ཡིན་པ་སྟེ། དེ་ནི་
ཉོན་མོངས་པའི་གཉེན་པོ་མེད་པར་ཡུང་པོ་རྣམས་གདན་དུ་མི་སྟེ་བཤོ། །

སོ་སོར་བརྟགས་པའི་ [17b5] འགོགས་པ་གང་ཞེན། གང་འགོག་པ་དེ་ནི་བྱལ་བ་སྟེ། དེ་ནི་གང་ཉོན་
མོངས་པའི་གཉེན་⁽⁹⁸⁾པོས་ཡུང་པོ་རྣམས་གདན་དུ་མི་སྟེ་བཤོ། །

དེ་བཞིན་ཉིད་གང་ཞེན། གང་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་དང་། ཆོས་བདག་མེད་པ་ཉིད་དོ། ། [17b6]

ཅིའི་ཕྱིར་སྟེ་མཆེད་ཅེས་བྱ་ཞེན། རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྟེ་བའི་སྟོའི་ཕྱིར་རོ། །

8. dhātu

ཁམས་བཙུང་བའི་བརྟན་ཉི་མིག་གི་ཁམས་དང་། གཞུགས་ཀྱི་ཁམས་དང་། མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་
ཁམས་དང་། རྟ་བའི་ཁམས་དང་། [17b7] སྤྱིའི་ཁམས་དང་། རྟ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དང་། སྤྱིའི་
ཁམས་དང་། དྲིའི་ཁམས་དང་། སྤྱིའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དང་། ལྗེའི་ཁམས་དང་། རོའི་ཁམས་
དང་། ལྗེའི་⁽⁹⁹⁾རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ [N17a] ཁམས་དང་། [17b8] ལྟས་ཀྱི་ཁམས་དང་། རེག་བྱའི་ཁམས་དང་།
ལྟས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དང་། ཡིད་ཀྱི་ཁམས་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཁམས་དང་། ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་
ཤེས་པའི་ཁམས་སོ། །

མིག་ལ་སོགས་ [D16b] པའི་ཁམས་དང་། [18a1] གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་ཁམས་ནི་སྟེ་མཆེད་རྣམས་ཇི་
ལྟ་བུ་བཞིན་མོ། །

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དུག་པོ་དག་ནི་མིག་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལ་བརྟེན་ཏེ། གཞུགས་ལ་སོགས་
པ་ལ་དམིགས་ [18a2] པ་རྣམ་པར་རིག་པ་དོ། །

ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ནི་དེ་དག་ཉིད་འགགས་མ་ཐག་པ་སྟེ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་དུག་པའི་གནས་བརྟན་པའི་
ཕྱིར་རོ། །

དེ་ལྟར་ན་ཁམས་བཙུང་བའི་བརྟན་དུ་ [C16b] རྣམ་པར་གཞུགས་གོ། །

གཞུགས་ཀྱི་ཡུང་པོ་གང་ཡིན་ [18a3] པ་དེ་ནི་སྟེ་མཆེད་དང་། ཁམས་བཙུང་དང་། ཆོས་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་
དང་། ཁམས་ཀྱི་ལྟོགས་གཅིག་གོ། །

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཡུང་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡིད་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་དང་། སེམས་ཀྱི་ཁམས་བདུན་མོ། །

གཞན་ཡུང་པོ་ [18a4] གསུམ་པོ་ ⁽¹⁰⁰⁾གང་ཡིན་པ་དག་དང་། གཞུགས་ཀྱི་ཡུང་པོའི་ལྟོགས་གཅིག་པོ་
དང་། འདས་མ་བྱས་དང་བཅས་པ་ནི་ཆོས་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཁམས་སོ། །

ཅིའི་ཕྱིར་ཁམས་ཞེས་⁽¹⁰¹⁾བྱ་ཞེན། བྱེད་པ་མེད་ལ་རང་གི་ [18a5] མཆོད་ཉིད་འཛིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །

云何無爲。謂虛空無爲。非擇滅無爲。擇滅無爲。及眞如等。

云何虛空。謂若容受諸色。

云何非擇滅。謂若滅非離繫。此復云何。謂離煩惱對治而諸蘊畢竟不生。

云何擇滅。謂若滅是離繫。此復云何。謂由煩惱對治故諸蘊畢竟不生。

云何眞如。謂若諸法法性法無我性。

問以何義故名爲處耶。

答諸識生長門義。是處義。

復有十八界。謂眼界色界眼識界。耳界聲界耳識界。鼻界香界鼻識界。舌界味界舌識界。身界觸界身識界。意界法界意識界。

眼等諸界及色等諸界。如處中說。六識界者。謂依眼等根緣色等境。了別爲性。

言意界者謂即無間滅等。

爲欲顯示第六意識。及廣建立十八界故。

如是色蘊即十處十界及法處法界一分識蘊即意處及七心界。餘三蘊及色蘊一分并諸無爲即法處法界。

無爲 [17b3]

ASBh p.14,17: ākāśaṃ rūpābhāva iti...

AKBh p.4,13: anāgatānāṃ dharmānāṃ utpādasyātyantavighnabhūto viśamyogād yo 'nyo nirodhaḥ, so 'pratisaṃkhyānirodhaḥ.

AK 1,6ab: pratisaṃkhyānirodho yo viśamyogaḥ.

處義

AKBh p.13,18: cittacaittādvārtha āyatanārthaḥ.

十八界 [P17b6]

AKBh p.11,22: yad yat samanantaranirodham vijñānaṃ tat tan manodhātū ity ucyeta.

AKBh p.11,28-p.12,1: śaṣṭhasya manovijñānadhātō āśrayo 'nyo nāsti. atas tadāśraya-prasiddhyarthaṃ manodhātū upadiṣṭaḥ. evam āśrayāśritālabanaśaṭkavyavasthānād aṣṭādaśa dhātavo bhavanti.

AKBh p.11,16-18: avijñaptivarjyo rūpaskandho daśāyatanāni daśa dhātavaḥ. vedanādayaḥ skandhās trayo 'vijñaptir asaṃskṛtāni ca dharmāyatanaṃ dharmadhātus ca. vijñānaskandho manaāyatanaṃ ṣaḍ vijñānadhātavo manodhātus ceti.

ཅིདི་ཕྱིར་ཡུང་པོ་ལ་སོགས་པ་བཤད་ཅེ་⁽¹⁰²⁾ན། བདག་ཏུ་འཛིན་པ་རྣམ་པ་གསུམ་གྱི་གཉིན་པོ་⁽¹⁰³⁾གོ་
རིམས་བཞིན་ནོ། །

བདག་ཏུ་འཛིན་པ་རྣམ་པ་གསུམ་ནི་གཅིག་ཡུར་འཛིན་པ་དང་། ^[18a6] ཟ་བར་འཛིན་པ་དང་། བྱེད་
པར་འཛིན་པ་ལོ། །

ཁམས་བཙུང་ལ་གཟུགས་ཅན་དུ་ཞེ་ན། གང་དག་གཟུགས་⁽¹⁰⁴⁾ཀྱི་ཡུང་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །

གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་དུ་ཞེ་ན། ལྷག་མ་རྣམས་སོ། །

བརྟན་⁽¹⁰⁵⁾དུ་ཡོད་པ་དུ་ཞེ་ན། ^[18a7]གཟུགས་ཀྱི་ཁམས་གཅིག་སྟེ། ⁽¹⁰⁶⁾ཡུལ་བཟན་དུ་ཡོད་པ་ལོ། །

བཟན་དུ་མེད་པ་ནི་⁽¹⁰⁷⁾དུ་ཞེ་ན། ལྷག་མ་རྣམས་སོ། །

ཐོགས་པ་དང་བཅས་པ་དུ་ཞེ་ན། གཟུགས་ཅན་བཙུ་སྟེ། གང་ལ་གང་ཐོགས་པ་ལོ། །

ཐོགས་⁽¹⁰⁸⁾པ་^[18a8]མེད་⁽¹⁰⁹⁾པ་དུ་ཞེ་⁽¹¹⁰⁾ན། ལྷག་མ་རྣམས་སོ། །

ཟག་པ་དང་བཅས་པ་དུ་ཞེ་ན། བཙུ་ཁྲ་དང་ཐ་མ་གསུམ་གྱི་ཆ་ལོ། །

མི་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། གསུམ་གྱི་ཆ་ལོ། ⁽¹¹¹⁾

དེ་དག་ཉོན་མོངས་པ་སྟེ་བདེ་མངོན་སུམ་གྱི་^[N17b]སྟོན་ཡུལ་གྱི་ཕྱིར་རོ། ^[18b1]

ཟག་པ་མེད་པ་དུ་ཞེ་ན། ཐ་མ་གསུམ་གྱི་ཆ་ལོ། །

འདོད་པ་དང་རབ་དུ་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། ཐམས་ཅད་དོ། །

གཟུགས་དང་རབ་དུ་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། ^[D17a]བཙུ་བཞི་སྟེ། དྲི་དང་། རོ་དང་། ལྷ་དང་། ལྷའི་རྣམ་
པར་ཤེས་པ་མ་^[18b2]གཏོགས་པ་ལོ། །

གཟུགས་⁽¹¹²⁾མེད་པ་དང་རབ་དུ་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། ཐ་མ་གསུམ་སོ། །

མི་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། གསུམ་གྱི་ཆ་ལོ། །

ཡུང་པོར་བཟུས་པ་དུ་ཞེ་ན། འདུས་མ་བྱས་མ་གཏོགས་པ་ལོ། །

ཉེ་བར་ལེན་པའི་ཡུང་པོས་^[18b3]བཟུས་པ་དུ་ཞེ་ན། གང་ཟག་པ་དང་བཅས་པ་རྣམས་སོ། །

དགེ་བ་དུ། མི་དགེ་བ་དུ། ཡུང་དུ་མ་བཟན་པ་དུ་ཞེ་ན། བཙུ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་ཆར་ཏེ། སེམས་ཀྱི་
ཁམས་བདུན་དང་། གཟུགས་ ^[C17a]དང་སྟོང་དང་ཆོས་ཀྱི་ ^[18b4]ཁམས་སོ། །ལྷག་མ་རྣམས་ནི་ཡུང་དུ་མ་
བཟན་⁽¹¹³⁾པ་ལོ། །

問以何義故名爲界。答以能任持無作用性白相義故。說名爲界。
問以何義故宣說蘊等。答爲欲對治三種我執。如其次第三種我執者。謂一性我執。受者我執。作者我執。

復次此十八界幾有色。謂十界一少分即色蘊白性。

幾無色。謂所餘界。

幾有見。謂一色界。

幾無見。謂所餘界。

幾有對。謂十有色界。若彼於是處有所障礙。是有對義。

幾無對。謂所餘界。

幾有漏。謂十五界及後三少分。由於是處煩惱起故。現所行處故。

幾無漏。謂後三少分。

幾欲界繫。謂一切。

幾色界繫。謂十四。除香味鼻舌識。

幾無色界繫。謂後三。

幾不繫。謂即彼無漏界。

幾蘊所攝。謂除無爲。

幾取蘊所攝。謂有漏。

幾善幾不善幾無記。謂十通三種七心界及色聲法界八無記。

界義

ASBh p.19,n.5: svalakṣaṇadhāraṇārthaḥ. Cf. T31,666c,27.

Cf. AKBh p.8,13: ity etc catvāraḥ svalakṣaṇopādāyarūpadhāraṇād dhātavaś catvāri mahābhūtāny ucyante.

ASBh p.22,4-5: rūṇi rūpaṃ tasya dharmasyātmavabhāvas tasmād asau rūṇi...

AS p.20,9: rūṇiparyayaṇāpy arūṇi. sarvāny arūṇiṇi.

AK I,29ab: sanidarśana cko 'tra rūpaṃ.

AKBh p.19,2: uktaṃ bhavati anidarśanāḥ śeṣā iti.

AK I,29bc: sapratighā daśa, rūṇiṇaḥ.

AKBh p.21,23-26: ya etc manodharmamanovijñānadhātava uktāḥ " sāsravānāsraṇā etc trayāḥ (AK I,31cd)" ye mārgasatyāsaṃskṛtasamgrhitās te 'nāsraṇā anye sāsravāḥ. "śeṣā tu sāsravāḥ (AK I,31d)."

AK I,30ab: kāmādhātāvāṇāṃ sarve.

AK I,30b-d: rūpe caturdaśa, vinā gandharasaghrāṇajihvāvijñānadhātubhiḥ.

AK I,31ab: ārūpyāptā manodharmamanovijñānadhātavaḥ.

AKBh p.12,4: tatra skandhaiḥ sarvasaṃskṛtasamgrahaḥ.

AKBh p.12,4: upādānaskandhaiḥ sarvasāsravāṇāṃ...

AKBh p.20,11-12: anye daśa dhātavaḥ kuśalākuśalāvyākṛtāḥ. tatra sapta dātavo 'lobhādisaṃprayuktāḥ kuśalāḥ. lobhādisaṃprayuktā akuśalāḥ. anye avyākṛtāḥ.

AK I,29cd: avyākṛtā aṣṭau, ta evārūpaśabdakāḥ.

ནང་གི་དུ་ཞེ་ན། བཙུག་ཉིས་ཏེ། གཟུགས་དང་། སྦྲ་དང་། གྲི་དང་། རོ་དང་། རེག་བྱ་དང་། ཚེས་ཀྱི་
(114) ཁམས་མ་གཏོགས་པ་འོ། །

ཕྱི་རོལ་གྱི་དུ་ཞེ་ན། རུག་སྟེ། གང་།^[18b5] དག་མ་གཏོགས་པ་རྣམས་སོ། །

དམིགས་པ་དང་བཅས་པ་དུ་ཞེ་ན། སེམས་ཀྱི་ཁམས་བདུན་དང་། ཚེས་ཀྱི་ཕྱོགས་གཅིག་ཁྱད་ཡིན་
ཏེ། གང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་འོ། །

དམིགས་པ་མེད་པ་དུ་ཞེ་ན། ལྷག་མ་།^[18b6] བཙུ་དང་། ཚེས་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་སོ། །

རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པ་དུ་ཞེ་ན། ཡིད་ཀྱི་ཁམས་དང་། ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འི་ཁམས་
དང་། ཚེས་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་སོ། །

རྟོག་པ་མེད་པ་དུ་ཞེ་ན། ^[18b7] ལྷག་མ་རྣམས་སོ། །

ཟིན་པ་དུ་ཞེ་ན། རང་གི་ཁྱད་དང་། བཞིའི་⁽¹¹⁵⁾ཕྱོགས་⁽¹¹⁶⁾ཏེ། གཟུགས་དང་། སྦྲ་དང་། གྲི་དང་། རོ་
དང་། རེག་བྱ་རྣམས་ཀྱི་འོ། །

ཟིན་པ་མ་ཡིན་པ་དུ་ཞེ་ན། བཞིའི་ཕྱོགས་སོ། །

བསྟན་པ་མཚུངས་^[18b8] པ་དུ་ཞེ་ན། རང་གི་གཟུགས་ཅན་ཁྱད་ཏེ། རང་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དག་དང་
ཡུལ་ཐུན་མོང་བ་⁽¹¹⁷⁾ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་⁽¹¹⁸⁾རོ། །

དེ་དག་དང་མཚུངས་པ་དུ་ཞེ་ན། དེ་དག་ཉིད་རང་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་སྟོང་པ་སྟེ། རང་གི་རིགས་
དང་།^[19a1] མཐུན་པ་འི་ཕྱིར་རོ། །

ཡུང་པོ་ལྷའི་རབ་དུ་བྱེད་པ་སྟོབ་དཔོན་དབྱིག་གཉེན་གྱིས་མཛད་པ་རྟོགས་སོ། །

རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་ཇོ་ན་མི་ཏ་དང་། ལྷ་ལ་རྒྱ་པོ་རྟི་དང་། དུ་ན་ལྷ་ལ་^[19a2]དང་། ལྷ་ཚེན་གྱི་ལོ་ཙཱ་བ་
བརྟེ་ལོ་ཤེས་སྟེ་ལ་སོགས་པས་སྦྱར་ཅིང་ལུས་ཏེ། གཏན་ལ་ཡབ་པ། །

幾是內。謂十二。除色聲香味觸及法界。

幾是外。謂六即所除。

幾有緣。謂七心界及法界少分。心所有法。

幾無緣。謂餘十及法界少分。

幾有分別。謂意識意識界法界少分。

〔無分別の説明欠〕

幾執受。謂五內界及四界少分。謂色香味觸。

幾非執受。謂餘九四少分。

幾同分。謂五內有色界。由與自識等境界故。

幾彼同分。謂即彼自識空時與白類等故。

大乘五蘊論一卷

AK I,39ab: dvādaśādhyātmikāḥ hitvā rūpādīn.

AKBh p.22,27-p.23,6: kati sālambanāḥ katy anālambanāḥ. "sapta sālambanās cittadhātavaḥ (AK I,33ab)," cakṣuḥśrotraghrāṇajihvākāyamanovijñānadhātavo manodhātuś ca etc sapta cittadhātavaḥ sālambanā viśayagrahaṇāt. "ardham ca dharmataḥ (AK I,33b)." sālambanam yac caitasikasvabhāvam. śeṣā daśa rūpiṇo dhātavo dharmadhātupradeśaś cāsaṃprayuktako 'nālambanā iti siddham.

Cf.AKBh p.22,6-8: tatra manodhātur manovijñānadhātuḥ saṃprayuktaś ca dharmadhātur anyatra vitarkavicārābhyāṃ kāmādhātāu prathame ca dhyāne savitarkāḥ savicārāḥ.

AS p.28,3-5: katham upāttaṃ, katy upātāni, kimartham upātāparikṣā. ... rūpaskandhaikadeśaḥ, pañca rūpiṇi dhātvāyatanāni, caturṇāṃ caikadeśaḥ.

ASBh p.43,16-17: pañca rūpiṇi dhātvāyatanāni cakṣurādīni. caturṇāṃ caikadeśo rūpagandharasapraṣṭavyānām indriyāvinirbhāgi.

AK I, 31b-d: dharmaśaṃjñakāḥ, sabhāgaḥ. tatsabhāgāś ca śeṣāḥ.

AS p.27,32-p.28,2: vijñānavirahitatatsādṛśyendriyaviśayaprabandhotpattito 'pi, vijñānavirahitasvasādṛśyapratibandhotpattito 'pi sabhāgatatsabhāgaṃ draṣṭavyam. rūpaskandhaikadeśaḥ, pañca rūpiṇi dhātvāyatanāni. vijñānayuktāyuktātmābhiniveśatyājanārtham.

テキスト異同

(1) N: ཅད་	(29) P,N: གྱིས་	(58) N: ཕྱག་
(2) P,N: བོ་	(30) P,N: སྒོང་	(59) N: གཡང་
(3) N: བཞེར་	(31) P,N: གིས་	(60) P,N: གྱི་
(4) N: རྟེན་	(32) N: ཉན་	(61) N: འདད་
(5) N: ཞ་	(33) P: གྱིས་	(62) P,N: འག་
(6) D: སྐམ་	(34) N: རྟར་	(63) N: བཙོལ་
(7) N: བའ་	(35) P,N: འཁྲ་	(64) N: བྱ་
(8) P,N: རྟམ་གསུམ་པ་	(36) P,N: དེ་	(65) P,N: སྦྱོད་
(9) N: འཕ་	(37) N: རྩ་དུ་	(66) N: ཐབ་
(10) N: དང་	(38) D,C: འབ་	(67) D,C: འཔ་
(11) P,N: དེ་	(39) N: ཞ་	(68) C: རུས་
(12) D: དེ་	(40) N: གང་	(69) N: ཚོ་
(13) P,N: འཕ་	(41) P,N: འཕར་	(70) N: སྦྱ་
(14) D: ཚེས་	(42) N: འགྱི་	(71) P,N: འདུ་ཤེས་
(15) N: རྟམ་	(43) N: སྦྱོགས་	(72) P,N: མངོན་
(16) N: རྟམ་	(44) P,N: འཛིགས་	(73) P,N: འདུ་ཤེས་ལྷོ།
(17) N: ཏིང་འཛིན་	(45) P,N: འཛིགས་	(74) N: སམས་
(18) N: དགེ་བཅུ་	(46) N: ཞ་	(75) P,N: ཁྲོང་
(19) N: སྤ་	(47) N: བལྟ་	(76) P,N: བསྟན་
(20) P,N: གཡང་བ་	(48) N: མདུ་	(77) C: སྟན་
(21) N: གས་	(49) N: འབྲུགས་	(78) N: འཕངས་
(22) N: འབྲུད་	(50) D,C: གྱིས་	(79) P,N: གྱིས་
(23) P,N: གྱིས་	(51) P,N: བཟུང་	(80) N: འབྲུང་
(24) N: ཉན་	(52) N: སམས་	(81) P,N: ལྟ་
(25) P,N: རིག་	(53) P: ཐོ་མཚམས་ ;	(82) P: གྱི་
(26) P: མཛོམ་	N: མཐོ་མཚམས་	(83) N: དག་
(27) P,N: འགཞན་ལ་	(54) P,N: འཛོམས་	(84) N: ཞ་
(28) P,N: འཕྲེ་	(55) P,N: འཛོམས་	(85) D,C: གེན་
	(56) D,C: སྒྲང་	(86) P,N: བསལ་
	(57) N: སམས་	(87) N: གོ་

- (88) P,N: གྱི་ C: མོངས་པ་
- (89) D,C: འཕས་ (118) N: ཕྱི་
- (90) N: བཞེས་
- (91) N: རྩོམ་
- (92) D: རི་ཡིད་ན་
- (93) P,N: བར་
- (94) D: དག་
- (95) C: ཡ་
- (96) D,C: སྒྲུ་
- (97) D: སྒྱ་
- (98) N: གཉན་
- (99) N: རྩེན་
- (100) C: བ་?
- (101) N: གཡས་ཤེས་?
- (102) P: ཅེས་
- (103) P,N: བོར་
- (104) C: གཟུག་
- (105) P,N: བརྟན་
- (106) N: སྟ་
- (107) N: མེད་པ་གང་
- (108) P: རྩོག་
- (109) N: མད་
- (110) N: ལ་
- (111) D,C: མི་ལྟ་ཆེ་
- (112) N: གཟགས་
- (113) P: སྟན་
- (114) N: ཁྱ་
- (115) P,N: ཕྱི་
- (116) N: ཕྱགས་
- (117) P,N: མོང་པ་ ;